तापमान
अधिकतम 40 .5 डिग्री
न्यूनतम 26 .0 डिग्री

हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि

रोहतक, रविवार, 7 जून 2026

10 प्रमुख सोसायटीज को एलपीजी फ्री बनाने की कवायद आईजीएल का 28 कॉलोनियों में इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार

12 वन विभाग ने शुरू की ग्रीन बेल्ट से अवैध कब्जे हटाने की मुहिम, 25 लोगों को थमाए नोटिस

हरियाणा का सबसे बड़ा आयुर्वेदिक हस्पताल

बढ़िया आयुर्वेदिक हस्पताल जिसका आपको इंतजार था–तो अब इंतजार किस बात का

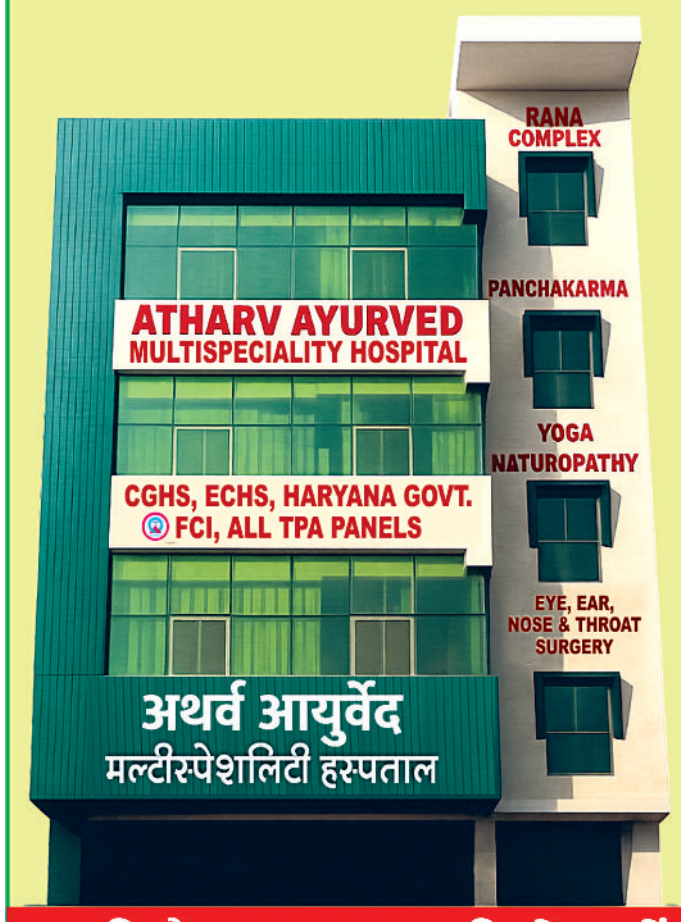

CGHS | ECHS | F.C.I. | Haryana Govt.
सभी प्राइवेट पैनल पर

आयुर्वेद-पंचकर्म-नैचुरोपैथी का संगम

Asli Ayurved With Modern Infra
Ayurved with a Difference-Experience it.

अथर्व™ आयुर्वेद
मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल

छोटूराम स्टेडियम के सामने, सोनीपत रोड, रोहतक
Contact: 01262-257211
8053928881, 8053128881
Dr. Prince | Dr. Sanjeev Madaan | Dr. Danish

सभी पैनल्स आपकी सेवा में
CGHS | ECHS | F.C.I. | Haryana Govt.
1. Star Health
2. ICICI Insurance
3. HDFC Insurance
4. Future General Insurance
5. Bajaj Allianz Insurance
6. SBI General Insurance
7. Care Insurance
8. Aditya Birla Insurance
9. Paramount TPA
10. Universal Sompo
11. Chola MS
12. Reliance General
13. Park Mediclaim & Many Others.

माँ बनने का सपना पूरा करें
बांझपन, बार-बार अबोरशन का समाधान
ट्यूब ब्लॉक, रसौली, फाइब्राइड में आप्रेशन क्यों ?
PCOD/PCOS/ Menstrual Disorders
की टेंशन क्यों ? आयुर्वेद–पंचकर्म से इलाज है
क्वालीफाइड, एक्सपीरियन्सड आयुर्वेदिक स्पैशलिस्ट प्रतिदिन मिलते हैं।
पहले व तीसरे शनिवार फ्री ओ.पी.डी.
सुबह 10:00 बजे से 2:00 बजे तक

बिना चीर फाड़
Anorectal Diseases: Piles, Fissure, Fistula etc.
गुदा रोग: बवासीर, भगंदर, फिशर आदि का
क्षार सूत्र, पंचकर्म से पक्का इलाज, ताकि दोबारा न हो
हर शनिवार फ्री चैकअप सुबह 10: बजे से 2:00 बजे तक
क्षार सूत्र/ प्रोसीजर मात्र Rs.10,000* में
आयें, इलाज करायें- शाम को घर जायें।
इलाज से अगले दिन काम पर जायें।
Qualified Expert प्रतिदिन मिलते हैं
*लैब/ दवा खर्च अलग, बिना दाखिला के

Joints Pain
जोड़ क्यों बदलवायें!
अथर्व में आराम पायें
जोड़ों–कमर दर्द, डिस्क, सरवाईकल, गठिया, लकवा, नसों का फूलना/ कमजोरी आदि में
आयुर्वेद-पंचकर्म-नैथुरोपैथी
पेन किलर → साईडइफैक्टस → नो ईलाज
अथर्व आयुर्वेद
नो साईडइफैक्टस ईलाज

गुर्दे-शुगर-बी. पी.
बीमारी और दवाओं दोनों के साइडइफैक्टस की चिंता छोड़
अथर्व आयुर्वेद आएं
- माईग्रेन, थाइरॉयड, पेशाब, सैक्स रोग
- एसिडिटी, कब्ज, आईबीएस आदि लिवर-पेट रोग
- सोरायसिस, एलर्जी, एग्जिमा आदि चमड़ी रोग
- बच्चों व बड़ों की खाँसी, दमा आदि छाती रोग।

अन्य सभी रोगों का
बिना साइड इफैक्टस समाधान
आयुर्वेद-पंचकर्म-नैचुरोपैथी से।

बिना दवा आराम देने वाले डिपार्टमेन्टस

नये-पुराने सभी दर्दों में
अग्निकर्म, रक्तमोक्षण
से तुरन्त आराम

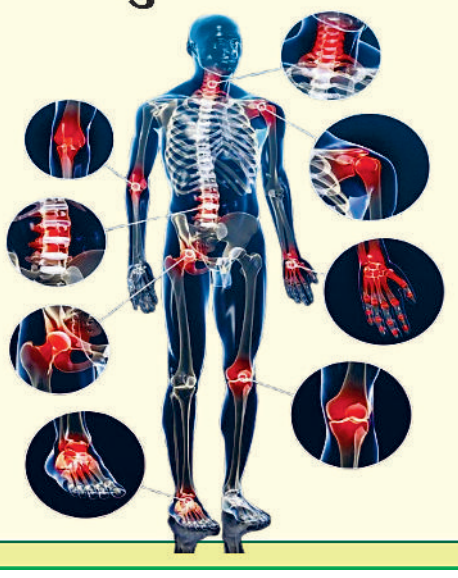

फिज़ीयोथैरेपी

आधुनिक मशीनों एवं क्वाईपफाईड डॉक्टरों द्वारा
जीवन आसान बनायें
दर्द, जकड़न, जोड़ों, मांस-पेशियों नसों की कमजोरी, चोट, ऑप्रेशन के बाद रिकवरी, स्पोर्टस इंजरी, आदि।

तेज रिकवरी
दर्द नहीं
एक्सपर्ट डॉक्टर प्रतिदिन मिलते हैं।

योग नैचुरोपैथी
से
बिना दवा ईलाज
शरीर-मन का संतुलन
रोगों से मुक्ति
स्वस्थ लम्बा जीवन पायें;
योगा- नैचुरोपैथी के डॉक्टर प्रतिदिन मिलते हैं।

खबर संक्षेप

सड़क हादसों के आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसों के बाद फरार तीन वाहन चालकों को गिरफ्तार किया है। दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर रूध पुल के पास हुए सड़क हादसे के बाद पुलिस ने गत 24 मई को केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने राजस्थान के काचरिया निवासी मीन कालबेलिया को गिरफ्तार किया है। रामपुरा थाना पुलिस ने 25 मई को दर्ज मामले में सीहा निवासी जयवीर को गिरफ्तार किया है। 17 मई को दर्ज मामले में मॉडल टाउन थाना पुलिस ने कुंडल निवासी धर्मेंद्र को गिरफ्तार किया है।

एनडीपीएस एक्ट का आरोपी भेजा जेल

रेवाड़ी। बावल थाना पुलिस ने नशीला पदार्थ बेचने के आरोप में गिरफ्तार किए गए आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया। एचएसएनसीबी की टीम ने मंगलेश्वर निवासी जतिन को गत दिवस स्मैक के साथ गिरफ्तार किया था। आरोपी के खिलाफ बावल पुलिस थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कराया गया था। वह गांव के ही बस स्टैंड पर नशीला पदार्थ बेचने के लिए खड़ा हुआ था। बावल थाना पुलिस ने आरोपी को शनिवार को कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया।

दहेज उत्पीड़न के मामलों में दो गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न के मामलों में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। बावल थाना पुलिस ने एक गांव निवासी विवाहिता की शिकायत पर दोनों पक्षों के बीच समझौता कराने के प्रयास किए थे। बात सिरे नहीं चढ़ने पर पुलिस ने 3 अप्रैल को ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने गुरुग्राम के बिलासपुर खुर्द निवासी राजेश को गिरफ्तार किया है। धारूहेड़ा थाना पुलिस ने 28 मई को दर्ज मामले में गुरुग्राम के कुणी निवासी नरेंद्र को गिरफ्तार किया है। बाद में दोनों को रिहा कर दिया गया।

हुड़दंगबाजी करने के तीन आरोपी काबू

रेवाड़ी। मॉडल टाउन थाना पुलिस ने सार्वजनिक स्थान पर हुड़दंगबाजी करने के आरोप में तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि कालाका रोड पर कुछ लोग शराब के नशे में हुड़दंगबाजी कर रहे हैं। सूचना मिलने के बाद मौके पर जाकर पुलिस ने तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों में बंजारवाड़ा निवासी पवन, विकास नगर निवासी गौतम और राजेश शामिल हैं। पुलिस ने तीनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। बाद में उन्हें मुचलके पर छोड़ दिया गया।

संपत्ति को नुकसान का आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। लापरवाही से वाहन चलाते हुए संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। रामपुरा थाना पुलिस ने संबंधित व्यक्ति की शिकायत के आधार पर 17 मई को विभिन्न धाराओं और मोटर व्हीकल एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने जांच के बाद फिरोज नगर की ढाणी राजगढ़ निवासी रविंद्र को गिरफ्तार कर लिया। तफ्तीश में शामिल करने के बाद आरोपी को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

दहेज हत्या की आरोपी महिला जेल भेजी

कोसली। नाहड़ पुलिस चौकी ने दहेज हत्या के मामले में आरोपी एक महिला को गिरफ्तार किया है। गत 2 मई को लूखी में हुई महिला की संदिग्ध हालात में मौत के बाद पुलिस ने मायके पक्ष के लोगों की शिकायत पर ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया था। मामले की जांच के बाद पुलिस ने आरोपी महिला पुष्पा देवी को गिरफ्तार कर लिया।
उसे कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

एलपीजी सिलेंडरों की आपूर्ति हो जाएगी बंद

एक माह के अंदर लोग ले सकेंगे पीएनजी कनेक्शन, इसके बाद सरेंडर करने होंगे एलपीजी सिलेंडर

प्रमुख सोसायटीज को एलपीजी फ्री बनाने की कवायद आईजीएल का 28 कॉलोनियों में इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

अमेरिका, इजराइल और ईरान के बीच युद्ध शुरू होने के बाद एलपीजी की कमी को देखते हुए स्वदेशी कंपनी इंद्रप्रस्थ गैस लि. ने शहर और कस्बों की प्रमुख सोसायटीज और कॉलोनियों में पीएनजी कनेक्शन देने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार कर दिया है। धारूहेड़ा और शहर की 28 सोसासटीज और कॉलोनियों के निवासी अब एक माह की अवधि में पीएनजी कनेक्शन ले सकेंगे। इसके बाद उन्हें एलपीजी कनेक्शन सरेंडर करने होंगे।

अलग खबर

बीते दिनों एलपीजी की आपूर्ति बाधित होने के बाद गैस एजेंसियों पर एडवांस सिलेंडर लेने के लिए लोगों में जमकर मारा-मारी देखने को मिली थी। एलपीजी का स्टॉक खतम होने के पैनिक ने लोगों को गैस एजेसियों पर बिना आवश्यकता के भी सिलेंडर रिफिल कराने के लिए मजबूर कर दिया था। इसके बाद से ही सरकार ने पीएनजी कनेक्शनों की संख्या बढ़ाने का निर्णय लिया था। एलपीजी कनेक्शनों को पीएनजी में कंवर्ट करने के लिए गैस वितरक कंपनियों से उपभोक्ताओं का सर्वे कराया गया था। सरकार ने इस बात पर जोर दिया था कि जिन कॉलोनियों में आईजीएल की पाइप लाइनें घरों के आसपास हैं, वहां एलपीजी यूज करने वाले ग्राहकों को पीएनजी कनेक्शन जारी किए जाएंगे। पीएनजी कनेक्शन लेने वाले उपभोक्ताओं को सिक्योरिटी राशि से लेकर कनेक्शन की शर्तों में भी छूट प्रदान करने की घोषणा की गई थी। खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की ओर से उन उपभोक्ताओं की पहचान शुरू की गई, जिनके घरों के आसपास पीएनजी की लाइन होने के बावजूद वह एलपीजी का इस्तेमाल कर रहे हैं। आईजीएल को सोसायटीज और कॉलोनियों में इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने के निर्देश सरकार की ओर से दिए गए थे। आईजीएल ने शहर और धारूहेड़ा की 28 सोसायटीज और बड़ी कॉलोनियों में हर घर तक पीएनजी कनेक्शन देने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार कर लिया है। इन सोसायटीज और कॉलोनी में रहने वाले एलपीजी उपभोक्ताओं को एक माह का समय दिया गया है। इस अवधि में पीएनजी कनेक्शन नहीं लेने वाले लोगों को आगे एलपीजी की आपूर्ति नहीं होगी, जिससे उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आईजीएल की ओर से आरडब्ल्यूए के पदाधिकारियों से लेकर जनप्रतिनिधियों तक से संपर्क किया जा रहा है।

रेवाड़ी। शहर की एक कॉलोनी में लगे पीएनजी कनेक्शन। फोटो : हरिभूमि

एलपीजी बुकिंग और सप्लाई से राहत

पीएनजी कनेक्शन लेने वाले उपभोक्ताओं को एलपीजी सिलेंडर की बुकिंग और आपूर्ति में होने वाली परेशानी से छुटकारा मिल जाएगा। विशेषज्ञों के अनुसार पीएनजी न केवल सुविधाजनक है, बल्कि यह पारंपरिक एलपीजी सिलेंडरों की तुलना में अधिक सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल भी मानी जाती है। गैस की निरंतर आपूर्ति होने से उपभोक्ताओं को सिलेंडर खत्म होने की चिंता भी नहीं रहेगी। आईजीएल ने संकेत दिए हैं कि भविष्य में इन सोसायटियों को एलपीजी मुक्त क्षेत्र के रूप में विकसित करने की दिशा में भी कदम उठाए जा सकते हैं।

जारी हो चुके साढ़े चार हजार कनेक्शन

जिन एरिया में पीएनजी की पाइप लाइनों का इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार हो चुका है, वहां अभी तक लगभग साढ़े 4 हजार घरों में कनेक्शन जारी किए जा चुके हैं। कंपनी की ओर से कराए गए सर्वे के अनुसार इन सोसायटीज और कॉलोनियों में लगभग 6 हजार ऐसे परिवार हैं, जो एलपीजी सिलेंडरों का इस्तेमाल करते हैं। इन परिवारों को पीएनजी कनेक्शन देने के साथ ही संबंधित एरिया एलपीजी फ्री जोन घोषित कर दिया जाएगा। इन एरिया में एलपीजी की सप्लाई पूरी तरह से बंद कर दी जाएगी।

इन कॉलोनियों में अब पीएनजी

शिवम सोसाइटी	एकता सोसाइटी	शांति लोक सोसाइटी
बेस्टेक पार्क व्यू	एक्साइज एंड	शिवा
डिलाइट	टैक्सेशन सोसाइटी	श्री श्याम
मुंजाल यूनिवर्सिटी	गवर्नमेंट एम्प्लॉइज	सीजीएचएस पार्ट-2
द्वारकाधीश	सीजीएचएस	शुभम कोऑपरेटिव
एम2के	गुरुतेग सोसाइटी	दी एब्सोल्यूट
पीयूष होराइजन	कान्हा जी	सीजीएचएस
विपुल गार्डन	सीजीएचएस	लिमिटेड
अमंगानीबीएमजी	लॉर्ड शिवा	दी कृष्णा
अंतरिक्ष टावर्स	नीलकमल सोसाइटी	सीजीएचएस पार्ट-2
बीएमजी एलिगेंट सिटी	न्यू फ्रेंड्स सीजीएचएस	दी साक्षी सोसाइटी
ईडन गार्डन	पुलिस लाइन सदर थाना	वसुंधरा सोसायटी

एलपीजी फ्री जोन होंगे घोषित

संबंधित परिवारों को पीएनजी कनेक्शन के लिए 30 दिन का समय दिया गया है। इस अवधि में कनेक्शन नहीं लेने वाले उपभोक्ताओं को एलपीजी की आपूर्ति भी बंद हो जाएगी, इसलिए उन्हें जल्द पीएनजी कनेक्शन लेने चाहिएं। इसके लिए सोसायटीज के आरडब्ल्यूए प्रधान व पदाधिकारियों को भी सूचित किया जा चुका है। अधिक जानकारी के लिए 1800-102-5109 हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क किया जा सकता है।
-दीपक कुमार, मेनेजर सेल्स, आईजीएल।

बावल में चोरों का उत्पात, टोंटियों को बना रहे निशाना

रेवाड़ी। सरकारी मिडिल स्कूल, जहां से चोरी की गई, स्कूल में लगा पाइप, जहां से चोर टोंटियां ले गए। फोटो : हरिभूमि

■ पुलिस ने स्कूल टीचर की शिकायत पर केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बावल

कस्बे में चोरों ने जमकर उत्पात मचाया हुआ है। मौका मिलते ही चोर वारदातों को अंजाम दे रहे हैं, लेकिन पुलिस उन पर नकेल कसने में नाकाम साबित हो रही है। मीडिल स्कूल से चोर वाटर कूलर और शौचालय तक की टोंटियां चोरी कर ले गए। पुलिस ने स्कूल टीचर की शिकायत पर केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू कर दी। पुलिस शिकायत में स्कूल टीचर प्रवीन कुमार ने बताया कि शनिवार सुबह जब वह सुबह स्कूल पहुंचा तो वाटर कूलर सहित अन्य स्थानों पर लगी पानी की टोंटियां गायब थीं। चोर रात के समय टोंटियां चोरी कर ले गए। उन्होंने बताया कि यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी दो बार स्कूल के ताले तोड़कर सामान चोरी किया जा चुका है। इस बार चोरों ने स्कूल में लगे पानी के नलों को निशाना बनाया है। विशेष बात यह है कि एक सप्ताह के भीतर यह दूसरी चोरी की घटना है, जिससे क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं। स्कूल परिसर के आसपास सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं। पुलिस फुटेज देखकर आरोपियों का पता लगा सकती है। पुलिस ने शिकायत मिलने के बाद चोरी की जांच शुरू कर दी है।

रेलवे रोड पर भी हो चुकी घटनाएं

हाल ही में रेलवे रोड क्षेत्र में भी चोरी की कई घटनाएं सामने आई हैं। कुछ दिन पहले पुल के पास स्थित तीन दुकानों के ताले तोड़ दिए गए थे, जबकि अगले ही दिन एक दुकान में आग लगने की घटना हुई थी। लगातार हो रही वारदातों से दुकानदारों और क्षेत्रवासियों में चिंता का माहौल है। लोगों ने पुलिस प्रशासन से चोरी की बढ़ती घटनाओं पर अंकुश लगाने और आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की है।

अवैध हथियारों के साथ एक आरोपी चढ़ा सीआईए के हत्थे

■ तलाशी लेने पर आरोपी के कब्जे से एक देशी पिस्टल एक देशी कट्टा व एक जिंदा कारतूस बरामद हुआ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

सीआईए की टीम ने अवैध पिस्टल और देशी कट्टे कारतूस के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज कराया गया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। सीआईए को सूचना मिली थी कि गोकलगढ़ निवासी मनिंदर सिंह अवैध हथियार रखता है। वह गोकलगढ़ से रेलवे फाटक बाइपास पर खड़ा किसी के आने का इंतजार कर रहा है। सूचना मिलने के बाद सीआईए प्रभारी सुमेर सिंह की टीम बताए गए स्थान पर पहुंची, तो वहा खड़े एक युवक ने तेज कदमों से चलते हुए भागने का प्रयास किया। पीछा करते हुए सीआईए की टीम ने उसे दबोच लिया। पूछताछ करने पर उसने अपना नाम गोकलगढ़ निवासी मनिंदर बताया। तलाशी लेने पर आरोपी के कब्जे से एक देशी पिस्टल, एक देशी कट्टा व एक जिंदा कारतूस बरामद हुए। आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कराने के बाद पुलिस ने उससे पूछताछ शुरू कर दी। आरोपी से हथियार सप्लाई करने वाले के बारे में पूछताछ की जा रही है।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में आरोपी। फोटो : हरिभूमि

एटीएम के टीनशेड एंगल में आ रहे करंट लगने से युवक की मौत

कोसली। गुड़ियानी गांव में एटीएम से पैसा निकालने आए तुंबाहेड़ी गांव के युवक की एटीएम के आगे लगी टीन शेड की एंगल में आ रहे करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। मृतक युवक के पिता ने एटीएम प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कोसली थाने में शिकायत दी है। श्रीभगवान ने कहा कि उनका लड़का दीपक शनिवार प्रातः गांव के ही अपने दोस्त संदीप के साथ मोटरसाइकिल पर गुड़ियानी गांव में लगे हिटाची कंपनी के एटीएम पर गया था। दीपक के एटीएम के आगे लगी टीन शैड की एंगल को छूने से करंट लग गया। सूचना के बाद जब वे मौके पर पहुंचे तो देखा कि एटीएम की शेड की एंगल के पास एक बिजली का तार कटा हुआ था, जिसके कारण एंगल में करंट आ रहा था। वे तुरंत दीपक को कोसली उपमंडल अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। कोसली पुलिस ने मृतक युवक के पिता की शिकायत पर केस दर्ज कर लिया है। पुलिस ने मृतक युवक के शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया।

नशे के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई: सीआईए व डॉग स्क्वॉयड की टीम ने ठिकानों पर मारे छापे

■ अभियान कोसली क्षेत्र की भोगल बस्ती और गांव देहलावास गुलाबपुरा में चलाया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली

जिला पुलिस की ओर से अपराधों पर लगाम लगाने और नशा तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए विशेष चेकिंग अभियान चलाए जा रहे हैं। शनिवार को नशा तस्करों के खिलाफ कार्रवाई के लिए सीआईए कोसली व डॉग स्क्वॉयड टीम ने संयुक्त रूप से सर्च अभियान चलाकर संदिग्ध स्थानों पर छापामार कार्रवाई की। अभियान कोसली क्षेत्र की भोगल बस्ती और गांव देहलावास गुलाबपुरा में चलाया गया। अभियान के दौरान पुलिस बल और डॉग स्क्वॉयड की टीमों ने इलाके के अनेक संदिग्ध ठिकानों, मकानों और सार्वजनिक स्थानों की तलाशी ली। नशे के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाते हुए सीआईए कोसली प्रभारी एसआई सुभाष चंद के नेतृत्व में पुलिस टीमों ने अलसुबह क्षेत्रों में दस्तक दी। अभियान में विशेष रूप से प्रशिक्षित स्निफर डॉग्स को शामिल किया गया ताकि जमीन या घरों में छिपाकर रखे गए किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों का पता लगाया जा सकें। पुलिस की अचानक हुई छापेमारी से नशा तस्करों और असामाजिक तत्वों में हड़कंप मच गया।

रेवाड़ी। क्षेत्र के एक मकान में तलाशी लेते हुए पुलिस टीम, कोसली क्षेत्र की बस्ती में मौजूद पुलिस। फोटो : हरिभूमि

जिले को नशामुक्त बनाना उद्देश्य

एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि अभियान का मुख्य उद्देश्य जिले को पूरी तरह से नशामुक्त बनाना और समाज में सुरक्षा का माहौल पैदा करना है। युवाओं को नशे की गर्त में धकेलने वाले तस्करों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। पुलिस युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने और नशे के काले कारोबार को जड़ से खत्म करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। एसपी ने कहा कि यदि किसी भी नागरिक को अपने आसपास नशा बेचने या अवैध गतिविधियों की जानकारी मिलती है, तुरंत पुलिस को 112 पर सूचित करें।

मौसम में अभी कुछ दिन बदलाव आने की संभावना

दिन में गर्मी ने निकाला पसीना, शाम को बूंदाबांदी से राहत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

मई माह के पहले सप्ताह में मौसम में बार-बार बदलाव देखने को मिल रहा है। एक के बाद एक विक्षोभ सक्रिय होने से कभी गर्मी का प्रकोप बढ़ता है, तो कभी बूंदाबांदी यह हल्की बारिश से मौसम खुशगवार बन जाता है। दोपहर बाद तक भारी गर्मी पसीना निकालती है, तो शाम के समय मौसम का मिजाज बदल जाता है। अगले सप्ताह के अंत में बारिश की संभावना है, जबकि दो-तीन दिन तक मौसम में बार-बार बदलाव देखने को मिलेगा। शनिवार को सुबह से ही आसमान साफ बना रहा। तेज धूप निकलने के बाद हवा में नमी बढ़ने से उमस बन गई। उमस ने लोगों को जमकर परेशान किया। अधिकतम तापमान 6.5 डिग्री सेल्सियस बढ़कर 40.5 डिग्री पर पहुंच गया। न्यूनतम तापमान भी 3.0 डिग्री की वृद्धि के साथ 26 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हवा में नमी का स्तर 32 प्रतिशत तक रहा। गत वर्ष के मुकाबले तापमान लगभग सामान्य बना हुआ है। हवा में नमी के चलते उमस बनने से लोगों को भारी गर्मी का सामना करना पड़ा। गर्मी का असर इस कदर बढ़ा की कूलरों तक की हवा बेअसर साबित होने लगी। मौसम विभाग के अनुसार अगले दो-तीन दिन तक मौसम इसी तरह का बना रहने की संभावना है। मौसम में बदलाव के साथ आसमान में बादल छाने और आंधी की आशंका बनी रह सकती है। तापमान में भी बार-बार बदलाव देखने को मिलेगा। पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के चलते 12 जून के आसपास हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना जताई जा रही है।

अगले सप्ताह के अंत में झमाझम बारिश के आसार

रेवाड़ी। शनिवार शाम को आई आंधी से बावल रोड पर बने धूल के गुब्बार।

आंधी के साथ हुई बूंदाबांदी

शाम के समय तेज आंधी के साथ कई इलाकों में बूंदाबांदी हुई। पड़ोसी जिला महेंद्रगढ़ में बारिश होने से हवाएं ठंडी पड़ गई, जिस कारण मौसम खुशगवार बन गया। आंधी के कारण कई स्थानों पर पेड़ व बिजली के पोल भी टूटने की सूचना है। शहर में दुकानों के बाहर लगे साइन बोर्ड तक उड़ गए। कई फीडरों को आंधी के कारण बंद कर दिया गया। बाद में इन फीडरों को चलाया गया।

बिजली की मांग बढ़ी

भारी गर्मी के चलते बिजली का लोड भी काफी बढ़ गया है। हाल ही में हुई बारिश के बाद एक बार बिजली की दैनिक खपत कम होकर 80 लाख यूनिट के आसपास आई थी। इसके बाद इसमें फिर से वृद्धि होना शुरू हो गया। अब बिजली की दैनिक खपत 98 लाख यूनिट के आसपास चल रही है। बारिश के बाद ही इसमें कमी आने की संभावना है।

अवैध शराब के साथ काबू किया एक आरोपी

धारूहेड़ा। पुलिस ने खटावली में छापा मारकर एक आरोपी को अवैध शराब के साथ गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ एक्साइज एक्ट के तहत केस दर्ज कराया गया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि ख टा व ली निवासी अजय अवैध शराब बेचने का धंधा करता है। उसके पास अवैध शराब मौजूद है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने बताए गए स्थान पर जाकर रेड की, तो आरोपी अजय पुलिस के हाथ लग गया। उसके पास से पुलिस ने देशी शराब की 11 बोतलें बरामद कीं। आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद उसके खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया। बाद में पुलिस ने आरोपी को निजी मुचलके के आधार पर रिहा कर दिया गया।

आरोपी अजय

सभी प्रवेश मेरिट के आधार पर होंगे: प्रो. डॉ. राजवीर सिंह

कॉलेजों में ऑनलाइन दाखिला प्रक्रिया तेज, 15 जून तक कर सकते हैं आवेदन

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

जिले के सभी सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में नए शैक्षणिक सत्र के लिए स्नातक कक्षाओं में दाखिला प्रक्रिया जारी है। जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी एवं राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. डॉ. राजवीर सिंह ने बताया कि इस वर्ष विद्यार्थियों में दाखिले को लेकर विशेष उत्साह देखा जा रहा है। जिले के सभी महाविद्यालयों में ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया सुचारू रूप से चल रही है और अब तक सभी कॉलेजों में आवेदनों का सत्यापन कार्य भी पूरा कर लिया गया है।

विद्यार्थियों को 15 जून तक ऑनलाइन आवेदन करने का अवसर दिया गया है, जिसके बाद आगे की प्रक्रिया प्रारंभ की जाएगी। जिला महेंद्रगढ़ के महाविद्यालयों में दाखिला प्रक्रिया पूरी तरह व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ रही है। कई पाठ्यक्रमों में सीटों से अधिक आवेदन प्राप्त होने से प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। प्रशासन की ओर से स्पष्ट किया गया है कि सभी प्रवेश केवल मेरिट के आधार पर ही किए जाएंगे, जिससे चयन प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी रहेगी।

15 जून के बाद बनेगी मेरिट सूची

प्रो. डॉ. राजवीर सिंह ने बताया कि आवेदन प्रक्रिया समाप्त होने के बाद सभी आवेदनों का पुनः सत्यापन किया जाएगा और उसके बाद मेरिट सूची तैयार की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी सभी प्रवेश पूरी तरह मेरिट आधारित होंगे। किसी भी प्रकार की अनियमितता को रोकने के लिए पूरी प्रक्रिया पारदर्शी रखी गई है। उन्होंने बताया कि मेरिट सूची जारी होने के बाद विद्यार्थियों को उनके अंकों के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा और निर्धारित सीटों के अनुसार ही दाखिला प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

राजकीय महाविद्यालय नारनौल में सर्वाधिक उत्साह

जिले के सबसे बड़े एवं प्राचीन राजकीय महाविद्यालय में इस बार विद्यार्थियों का विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की ओर से विभिन्न स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन किए जा रहे हैं। प्रो. राजवीर सिंह ने बताया कि कॉलेज में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों की बढ़ती रुचि शिक्षा के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि बेहतर शैक्षणिक वातावरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के कारण विद्यार्थी इन संस्थानों की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

विभिन्न पाठ्यक्रमों में आवेदन स्थिति

पाठ्यक्रम का नाम	कुल सीटें	कुल आवेदन	आवेदन प्रतिशत
बैचलर ऑफ आर्ट्स	660	732	110 प्रतिशत
बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन	40	85	212 प्रतिशत
बैचलर ऑफ कॉमर्स	240	172	71 प्रतिशत
बैचलर ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशन	40	181	452 प्रतिशत
बैचलर ऑफ साइंस लाइफ साइंसेज	160	268	167 प्रतिशत
बैचलर ऑफ साइंस फिजिकल साइंसेज	400	412	103 प्रतिशत

सीयूईटी के अभ्यार्थी 12 तक कर सकते हैं पंजीकरण

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए आवदेन प्रक्रिया जारी है। विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में दाखिला के लिए सीयूईटी (पीजी) 2026 के अभ्यर्थी ऑनलाइन माध्यम से 12 जून तक पंजीकरण कर सकते हैं। इस प्रक्रिया के अंतर्गत हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की मानविकी एवं सामाजिक अध्ययन पीठ के अंतर्गत आठ विभागों में दाखिले के अवसर उपलब्ध हैं। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेशवर कुमार का कहना है कि विषय चाहे राजनीति विज्ञान हो, समाजशास्त्र हो, मनोविज्ञान हो या फिर पत्रकारिता एवं जनसंचार सभी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सामाजिक बदलावों को जानने-समझने में मददगार होते हैं। मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययन पीठ हमें सामाजिक स्वरूप को समझने के लिए उपयोगी विषयों के साथ-साथ अंग्रेजी, हिंदी व संस्कृत जैसी भाषाओं का अध्ययन करने का अवसर भी प्रदान करती है। इस पीठ के अंतर्गत उपलब्ध सभी पाठ्यक्रम रोजगार व स्वरोजगार का मार्ग प्रशस्त करते हैं। विश्वविद्यालय की दाखिला समिति के डॉ. सुमित कुमार ने बताया कि मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययन पीठ में राजनीति विज्ञान विभाग में एमए राजनीति विज्ञान, अंग्रेजी विभाग में एमए अंग्रेजी व मनोविज्ञान विभाग में एमए साइक्लॉजी, पीजी डिप्लोमा इन रिहेब्लिटेशन साइक्लॉजी, एडवांस डिप्लोमा इन चाइल्ड गाइडेंस एंड काउंसलिंग, इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग एमए इतिहास, समाजशास्त्र विभाग में एमए समाजशास्त्र के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम अध्ययन के लिए उपलब्ध है। इसी क्रम में पीठ के अंतर्गत पत्रकारिता एवं जनसंचार में एम.ए पत्रकारिता एवं जनसंचार, हिंदी विभाग में एमए हिंदी, एमए हिंदी अनुवाद व संस्कृत विभाग में एमए संस्कृत की पढ़ाई का विकल्प विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि इन सीटों पर दाखिले सीयूईटी 2026 के माध्यम से होंगे और आवेदक दाखिले के लिए ऑनलाइन पंजीकरण कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

प्रदेशव्यापी आंदोलन की जरूरत : कामरेड

रेवाड़ी। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन की ओर से निमोठ व सुनारिया सहित अनेक गांवों में जनसभा का आयोजन किया गया। जनसभा का संचालन किसान नेता रामकुमार निमोठ ने किया। इस मौके पर ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष व संयुक्त किसान मोर्चा के नेता कामरेड सत्यवान मौजूद थे। उन्होंने कहा कि जन जीवन के ज्वलंत मुद्दे महगाई व बेरोजगारी के विरोध, मनरेगा स्कीम की बहाली, किसानों को उनकी फसल के स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के अनुसार लागत मूल्य देने, किसान विरोधी अमेरिका भारत डील के विरोध व कर्ज मुक्ति सहित अनेकों मांगों को लेकर प्रदेशव्यापी आंदोलन करने की जरूरत है।

खेड़ी तलवाना गांव से गाय चोरी, मामला दर्ज

कनीना। सदर थाना के अंतर्गत आने वाले गांव खेड़ी तलवाना से गाय चोरी होने का मामला सामने आया है। पीड़ित पशुपालक की शिकायत व सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव खेड़ी तलवाना निवासी नत्थूराम ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनकी करीब तीन साल की दुधारू गाय, जिसे उन्होंने गांव की फिरनी में छोड़ा हुआ था, जो सुबह अचानक लापता हो गई। सीसीटीवी फुटेज की जांच करने पर पता चला कि दोपहर करीब सवा एक बजे कुछ अज्ञात व्यक्ति उनकी गाय को जबरन एक सफेद रंग की टाटा गाड़ी में लादकर ले जा रहे हैं।

नारनौल के कई कमर्शियल भवन सुरक्षा मानकों से दूर

फायर एनओसी बिना चल रहे कई होटल, बड़े हादसे की आशंका बरकरार

आग लगी तो लोगों को बचना होगा मुश्किल !

राजकुमार ⏭ नारनौल

शहर के कई होटल और कमर्शियल भवन घनी आबादी वाले क्षेत्रों तथा तंग गलियों में बने हुए हैं। इनमें से अनेक तीन से चार मंजिला इमारतें हैं, जहां आग लगने की स्थिति में लोगों को बाहर निकालना और फायर ब्रिगेड का समय पर पहुंचना बेहद कठिन साबित हो सकता है।

दिल्ली में हाल ही में तंग गलियों के बीच बने एक होटल में हुई भीषण आगजनी की घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया। होटल के संकरे रास्तों और गुफानुमा कमरों के कारण लोगों को बाहर निकलने का मौका तक नहीं मिला और करीब 21 देशी-विदेशी पर्यटकों की दर्दनाक मौत हो गई। इस घटना के बाद सवाल उठने लगे हैं कि लोग जिले में ऐसे किसी हादसे से सुरक्षित हैं या नहीं।

अलग खबर

यदि जिले के होटलों, गेस्ट हाउसों और अन्य व्यावसायिक भवनों की स्थिति पर नजर डालें तो हालात चिंताजनक दिखाई देते हैं। शहर के कई होटल और कमर्शियल भवन घनी आबादी वाले क्षेत्रों तथा तंग गलियों में बने हुए हैं। इनमें से अनेक तीन से चार मंजिला इमारतें हैं, जहां आग लगने की स्थिति में लोगों को बाहर निकालना और फायर ब्रिगेड का समय पर पहुंचना बेहद कठिन साबित हो सकता है। जिले के अधिकांश होटल और व्यावसायिक भवन फायर सेफ्टी नियमों का पूरी तरह पालन नहीं कर रहे। कई स्थानों पर अग्निशमन उपकरण या तो मौजूद नहीं हैं या उनकी वैधता अवधि समाप्त हो चुकी है। ऐसे में यदि आग लगने की घटना होती है तो शुरुआती स्तर पर आग पर काबू पाना मुश्किल हो सकता है।

नारनौल। फायर स्टेशन में खड़ी आग बुझाने वाली गाड़ियां। फोटो : हरिभूमि

चार फायर स्टेशनों की जिम्मेदारी एक अधिकारी पर

जिले की फायर व्यवस्था भी संसाधनों और मानवबल के दबाव से जूझती दिखाई देती है। वर्तमान में फायर अधिकारी राजवीर सिंह के पास नारनौल सहित जिले के चारों फायर स्टेशनों का प्रभार है। ऐसे में सभी क्षेत्रों की नियमित निगरानी और निरीक्षण कर पाना चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि फायर विभाग को नियमित निरीक्षण अभियान चलाकर बिना एनओसी संचालित हो रहे होटलों और व्यावसायिक भवनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। साथ ही भवन मालिकों को आपातकालीन निकास, अग्निशमन यंत्र, फायर अलार्म और अन्य सुरक्षा मानकों को अनिवार्य रूप से लागू करना चाहिए। दिल्ली की हालिया त्रासदी ने एक बार फिर चेतावनी दी है कि आग लगने के बाद कार्रवाई करने से बेहतर है पहले से तैयारी करना। सवाल यह है कि क्या नारनौल और महेंद्रगढ़ प्रशासन इस चेतावनी से सबक लेगा या फिर किसी बड़े हादसे का इंतजार किया जाएगा?

नियमों के पालन में दिख रही ढिलाई

शहर के कई भवन मालिकों और होटल संचालकों पर फायर सेफ्टी नियमों की अनदेखी के आरोप लगते रहे हैं। दूसरी ओर, स्थानीय स्तर पर यह चर्चा भी बनी रहती है कि आगजनी की घटनाओं या नियमों के उल्लंघन के मामलों में अक्सर केवल नोटिस जारी कर औपचारिकता पूरी कर दी जाती है। कड़ी कार्रवाई कम ही देखने को मिलती है। विशेषज्ञों का मानना है कि फायर सेफ्टी केवल कागजी कार्रवाई नहीं, बल्कि जन सुरक्षा से जुड़ा गंभीर विषय है। यदि समय रहते सुरक्षा मानकों को लागू नहीं किया गया तो किसी भी आपात स्थिति में जान-माल का बड़ा नुकसान हो सकता है।

एनओसी करीब दस के पास ही

फायर ब्रिगेड विभाग से मिली जानकारी के अनुसार जिले में संचालित होटलों में से केवल नौ-दस होटलों के पास ही वैध फायर एनओसी और आवश्यक अग्नि सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध है। शेष होटल एवं कई व्यावसायिक प्रतिष्ठान बिना पर्याप्त सुरक्षा इंतजामों के संचालित हो रहे हैं। विभाग द्वारा करीब छह माह पूर्व अनेक होटलों और कमर्शियल भवनों को नोटिस जारी किए गए थे, लेकिन उसके बाद कार्रवाई की गति बेहद धीमी रही।

पहले भी हो चुके हैं बड़े हादसे

नारनौल में आगजनी की घटनाओं का इतिहास भी कम चिंताजनक नहीं है। पिछले वर्ष लघु सचिवालय स्थित डीआईओ कार्यालय में भीषण आग लग गई थी, जो कई घंटों तक नहीं बूझ पाई थी और आधा दर्जन गाड़ियां फायर ब्रिगेड की लगाने के बावजूद कार्यालय खाक होने से नहीं बच पाया था। इससे कंप्यूटरों, इंटरनेट आदि से जुड़ी सामान का लाखों रुपये का नुकसान हुआ था। वहीं इससे पहले सिंघाना रोड स्थित एक दुपहिया वाहन एजेंसी के बेसमेंट में लगी आग ने प्रशासन की तैयारियों की पोल खोल दी थी। आग इतनी भयावह थी कि फायर कर्मियों को बेसमेंट तक पहुंचने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। बाद में वहां रखे गैस सिलेंडरों के फटने से नुकसान और बढ़ गया। इन घटनाओं ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि भवनों में सुरक्षा मानकों का पालन नहीं किया गया तो भविष्य में किसी भी समय बड़ा हादसा हो सकता है।

पांच एकड़ में डीएसआर मशीन से धान की हुई सीधी बिजाई

रेवाड़ी। डीएसआर मशीन से धान की बिजाई का प्रदर्शन करते अधिकारी।

- इस पद्धति से धान की बिजाई करने पर होती है पानी की बचत लागत भी कम आता है

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

कृषि विभाग की ओर से गांव कालूवास में 5 एकड़ क्षेत्र में डीएसआर मशीन से धान की सीधी बिजाई का प्रदर्शन किया गया। सहायक कृषि अभियंता दिनेश शर्मा के नेतृत्व में विभाग के अधिकारियों ने किसानों को डीएसआर तकनीक के लाभों के बारे में जानकारी दी और उन्हे पारंपरिक रोपाई की जगह सीधी बिजाई अपनाने के लिए प्रेरित किया। कृषि अधिकारियों ने बताया कि डीएसआर तकनीक से धान की खेती में पानी की बचत, मजदूरी की लागत में कमी और समय की बचत होती है।

पारंपरिक विधि की तुलना में डीएसआर से लगभग 25-30 प्रतिशत कम पानी लगता है और नर्सरी तैयार करने तथा रोपाई पर होने वाला खर्च बच जाता है। इसके साथ ही फसल जल्दी तैयार होती है और मजदूरों पर निर्भरता भी कम होती है। अधिकारियों ने कहा कि जल स्तर में गिरावट और श्रमिकों की कमी को देखते हुए डीएसआर तकनीक रेवाड़ी जैसे क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है। विभाग किसानों को इस तकनीक को अपनाने के लिए तकनीकी मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और सब्सिडी की जानकारी भी उपलब्ध करा रहा है। इस मौके पर कृषि विकास अधिकारी कृषि यंत्र सुनील कुमार व कनिष्ठ अभियंता जोगेन्द्र पाल भी मौजूद थे।

मिलेगी प्रोत्साहन राशि

कृषि विभाग के इंजी. दिनेश शर्मा ने बताया कि कृषि विभाग की ओर से खरीफ 2026 सीजन में धान की सीधी बिजाई डीएसआर मशीन से करने पर किसानों को 4500 रुपये प्रति एकड़ की दर से प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराई जाएगी। योजना के तहत प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने के लिए इच्छुक किसान को मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर अपना पंजीकरण कराना आवश्यक है।

विधायक ने 1.33 करोड़ के कार्यों का किया उद्घाटन

रेवाड़ी। नवनिर्मित रास्ते का उद्घाटन करते विधायक अनिल यादव।

- क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करना प्राथमिकता : विधायक

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोसली

कोसली के विधायक अनिल यादव ने कहा कि क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करना ही उनकी प्राथमिकता है। विधायक ने शनिवार को गांव कतोपुरी, बास, रतनथल व चांदनवास में आयोजित सभाओं में ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के मार्गदर्शन में कोसली विधानसभा क्षेत्र का विकास कराया जा रहा है। स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कोसली हलके में आधुनिक चिकित्सा सेवाएं प्रदान की हैं। विधायक ने गांव कतोपुरी से चांग तक 85 लाख रुपए की लागत से बनाए गए रास्ते का उद्घाटन किया। गांव बास, रतनथल में 48 लाख रुपए की लागत से किए गए विकास कार्यों का उद्घाटन किया। विधायक ने जाटूसाना ब्लॉक ऑफिस में लोगों की समस्याओं को भी सुना और अधिकारियों को उनका निवारण करने के निर्देश दिए। इस मौके पर अनेक पंचायत प्रतिनिधि व ग्रामीण मौजूद थे।

पार्क में पक्षियों के लिए किया पानी का प्रबंध

रेवाड़ी। जनशक्ति जागृति मंच की ओर से पर्यावरण संरक्षण एवं पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता का प्रेरणादायक कार्य किया गया। संस्था के सदस्यों ने भीषण गर्मी को देखते हुए राव तुलाराम पार्क में पक्षियों के लिए पेड़ों की टहनियों पर पानी के सकारे लटकाए ताकि पक्षियों को राहत मिल सकें। इस अवसर पर संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्ष मेनका सोनी ने कहा कि यह पहल न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है, बल्कि जीव-जंतुओं एवं पक्षियों के प्रति मानव संवेदनाओं का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस मौके पर मंच की जिलाध्यक्ष मंजू शर्मा, कुलदीप सोनी जिला कार्यक्रम अधिकारी, प्रकाश वर्मा कोषाध्यक्ष, दीपक कुमार जिला महासचिव, मीनू शर्मा, आरोग्य योगा ग्रुप के आचार्य प्रकाश सैनी, सह आचार्य सुभाष सोनी, हास्य कवि राजीव भार्गव , दीपक गोयल, डा. ओमप्रकाश, सुरेंद्र चौहान, लाली देवी, मयंक वर्मा व महिमा सोनी मौजूद थे।

गलघोटू रोग से बचाव के लिए पशुओं का टीकाकरण जरूरी

- पशु अस्पताल जाटूसाना की ओर से चला टीकाकरण अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭ जाटूसाना

पशुओं को गलघोटू (एचएस) और मुंहखुर (एफएमडी) जैसी गंभीर एवं संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए राजकीय पशु अस्पताल जाटूसाना की ओर से विशेष टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है। अस्पताल की ओर से क्षेत्र के पशुओं को निःशुल्क टीके लगाए जा रहे हैं, ताकि पशुधन को इन बीमारियों से सुरक्षित रखा जा सकें। पशु चिकित्सक डा. हरीश यादव ने बताया कि यह टीकाकरण वर्ष में दो बार किया जाता है। पहला चरण बरसात के मौसम से पहले तथा दूसरा सर्दियों के मौसम में आयोजित किया जाता है। समय पर टीकाकरण कराने से पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और वे गंभीर बीमारियों की चपेट में आने से बच जाते हैं। डा. यादव ने बताया कि गलघोटू रोग होने पर पशुओं को सांस लेने में परेशानी होने लगती है तथा गले में सूजन और गांठ बनने जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। वहीं मुंहखुर रोग से प्रभावित पशुओं के मुंह में छाले पड़ जाते हैं, जिससे उन्हें चारा खाने में कठिनाई होती है और दूध उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उन्होंने बताया कि पहले गलघोटू और मुंहखुर रोग के लिए अलग-अलग टीके लगाए जाते थे।

आईजीयू में एआई एवं मशीन लर्निंग कोर्स में दाखिले शुरू, सीटें हैं 60

- उद्यागों की मांग को देखते हुए शुरू किए गए नए कोर्स

हरिभूमि न्यूज ⏭ मीरपुर

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग के अंतर्गत बीटेक (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं मशीन लर्निंग) कार्यक्रम में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी है। इच्छुक विद्यार्थी निर्धारित तिथि तक आवेदन कर सकते हैं। यह आधुनिक और उद्योगोन्मुख पाठ्यक्रम सीएसई विभाग की ओर से संचालित किया जाएगा, जिससे विद्यार्थियों को उभरती तकनीकों के

प्रो. सतेंद्र बल।

क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा सकेगी। एआई और मशीन लर्निंग वर्तमान समय में विश्व के सबसे तेजी से विकसित होने वाले तकनीकी क्षेत्र हैं। इन्हीं बढ़ती हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यह विशेष स्नातक कार्यक्रम शुरू किया गया है, ताकि विद्यार्थियों को उद्योग की मांग के अनुरूप समकालीन तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्रदान किया जा सकें। इस चार वर्षीय कार्यक्रम से विद्यार्थियों को करियर बनाने में मदद मिलेगी।

निरंतर बढ़ रहा है अर्थशास्त्र विषय का महत्व : प्रो. सतीश

- दाखिले के लिए 20 तक जमा कर सकते हैं आनलाइन आवेदन

हरिभूमि न्यूज ⏭ मीरपुर

इंदिरा गांधी विवि के अर्थशास्त्र विभाग में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए प्रवेश प्रक्रिया 26 मई से शुरू हो चुकी है। इच्छुक विद्यार्थी 20 जून तक ऑनलाइन अथवा विश्वविद्यालय के निर्धारित माध्यम से आवेदन जमा कर सकते हैं। अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष व सामाजिक विज्ञान के डीन प्रोफेसर सतीश कुमार ने कहा कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अर्थशास्त्र विषय का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। यह विषय राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोजगार, शोध तथा नीति-निर्माण के

प्रो. सतीश कुमार।

व्यापक अवसर प्रदान करता है। अर्थशास्त्र का अध्ययन विद्यार्थियों को आर्थिक, सामाजिक एवं वैश्विक चुनौतियों को समझने तथा उनके समाधान खोजने की क्षमता विकसित करता है। प्रो. कुमार ने बताया कि विभाग में विद्यार्थियों को शोधोन्मुख शिक्षा, उच्च योग्यताधारी एवं अनुभवी संकाय सदस्यों का मार्गदर्शन, अनुशासित एवं स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

एक लाख तक के बकायादारों को आवेदन की जरूरत नहीं

एकमुश्त निपटान स्कीम : 120 दिन तक उठा सकते हैं लाभ

पहली जून से शुरू हुई है स्कीम, 28 सितंबर तक लाभ उठा सकता है बकायादार

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

प्रीति चौधरी।

हरियाणा सरकार की ओर से वर्ष 2025 में छोटे व्यापारियों को लाभ देने के लिए शुरू की गई एकमुश्त निपटान स्कीम का 115223 व्यापारियों ने पुरजोर लाभ उठाया। स्कीम की कामयाबी को देखते हुए सरकार ने एक बार फिर एक जून से निपटान स्कीम शुरू की है, जिससे पुराने बकायों को निपटाने के साथ अदालतों में लंबित मुकदमों का समाधान किया जा सकें।

उप आबकारी एवं कराधान आयुक्त प्रीति चौधरी ने बताया कि सरकार ने 1 जून से 120 दिनों के लिए 28 सितंबर तक एक मुश्त निपटान स्कीम शुरू की है, जिसके तहत सात कराधान अधिनियमों के तहत निर्धारित बकाया देय राशि के निपटान का प्रावधान है। यदि किसी करदाता पर किसी संबंधित अधिनियम के अंतर्गत एक वर्ष में 1 लाख रुपये तक का कर बकाया है तो उसे इस स्कीम में आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है। उसका उस वर्ष के लिए उस अधिनियम में संपूर्ण कर, ब्याज एवं जुर्माना राशि माफ हो जाएगी। आवेदक अपने बकाया देय राशि के निपटान के लिए किसी भी अधिनियम में किसी भी वर्ष के लिए आवेदन कर सकता है। पूर्ववर्ती हरियाणा सामान्य बिक्री कर अधिनियम, 1973 के तहत बकाया राशि के निपटान के लिए विशेष छूट उपलब्ध है। हरियाणा सामान्य बिक्री कर अधिनियम, 1973 को 1 अप्रैल 2003 से हरियाणा मूल्य वर्धित कर अधिनियम, 2003 के लागू होने के साथ निरस्त कर दिया गया था।

तीन माह में सत्यापित हों प्रपत्र

प्रीति चौधरी ने बताया कि फार्म सी, फार्म एफ, फार्म एच, फार्म ई-1, फार्म ई-2, टैक्स इनवॉइस-वैट सी-4, वैट डी-1, वैट डी-2 आदि जैसे वैधानिक प्रपत्रों के न जमा करने के कारण बड़ी संख्या में बकाया राशि देय है। इन मामलों में से कुछ विभिन्न अपील स्तरों पर हैं। इन बकाया को विशेष रूप से लक्षित करने के लिए एक नई छूट प्रस्तावित की जा रही है। यदि कोई व्यक्ति अब ऐसे प्रपत्र प्रस्तुत करने में सक्षम है, तो उसके कर की मांग उन प्रपत्रों के प्रस्तुत करने से प्राप्त होने वाली छूट की राशि से घटा कर कम कर दी जाएगी, बशर्ते ये प्रपत्र तीन महीने के भीतर सत्यापित हो जाएं। यह लाभ ऐसे फर्जी-नकली फर्मों को उपलब्ध नहीं होगा, जिनके खिलाफ आपराधिक कार्यवाही शुरू की गई है। यह लाभ उन वैधानिक प्रपत्रों के लिए भी उपलब्ध नहीं होगा जिन्हें पहले प्राधिकरणों की ओर से अस्वीकार कर दिया गया था। यह केवल हरियाणा मूल्य वर्धित कर अधिनियम, 2003 और केंद्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 से संबंधित बकाया राशि पर लागू होगा।

5 लाख तक के निपटारे को किस्त नहीं

चौधरी ने बताया कि आवेदक को प्रत्येक पूर्ववर्ती स्लैब में दी गई छूट का पूर्ण लाभ उसके बकाया कर राशि की स्लैब तक मिलेगा। बकाया राशि निर्धारित करने वाले किसी भी आदेश के विरुद्ध अपील या मुकदमे में शामिल आवेदक भी लंबित अपीय या मुकदमे को वापस लेने की शर्त के साथ इस स्कीम के तहत आवेदन कर सकते है। निपटान की राशि का भुगतान किस्तों में करने की भी सुविधा स्कीम में दी जा रही है। 5 लाख रुपए तक के निपटान की राशि के लिए कोई किस्त नहीं है। 5 लाख रुपए से अधिक और 25 लाख रुपए तक के निपटान की राशि के लिए दो समान किस्तें है। एक किस्त आवेदन जमा करते समय और दूसरी अंतरिम आदेश की तिथि से 60 दिनों के भीतर जमा करानी होगी। पच्चीस लाख रुपए से अधिक के निपटान की राशि के लिए तीन किस्तें होगी। आवेदन जमा करते समय निपटान राशि का 40 प्रतिशत, अंतरिम आदेश की तिथि से 60 दिनों के भीतर दूसरी किस्त, निपटान राशि का 30 प्रतिशत और अंतरिम आदेश की तिथि से 120 दिनों के भीतर शेष राशि की तीसरी किस्त देनी होगी।

खबर संक्षेप

लक्ष्मी नारायण मंदिर में भागवत कथा 8 से

रेवाड़ी। गढ़ी बोलनी रोड स्थित बीएमजी सिटी के श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर में 8 जून से श्रीमद् भागवत कथा यज्ञ सप्ताह का आयोजन किया जाएगा। अधिक मास में आयोजित कथा 15 जून तक चलेगी। चित्रकूट से लखन महाराज प्रतिदिन शाम 4 से 7 बजे तक कथा का वाचन करेंगे। कथा के प्रथम दिन 8 जून को सुबह 8 बजे कलश यात्रा निकाली जाएगी। कलश यात्रा बीएमजी सिटी, एलिगेंट हाइट, अंतरिक्ष टावर व बीएमजी होम्स होते हुए कथा स्थल पर पहुंचेगी। इसके बाद विशेष पूजा अर्चना एवं भागवत गीता पूजन के साथ कथा की शुरूआत की जाएगी।

मारपीट मामले का एक आरोपी गिरफ्तार

धारूहेड़ा। पुलिस ने गत वर्ष दिसंबर माह में दर्ज किए गए मारपीट करने व जान से मारने की धमकी देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पीड़ित के बयान पर पुलिस ने गत वर्ष 26 दिसंबर को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। पीड़ित ने मारपीट करते हुए घायल करने के आरोप लगाए थे। इस मामले के एक आरोपी शिव मंदिर के पास रहने वाले विकास को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। तफ्तीश में शामिल करने के बाद उसे पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

एससी चौपालों में ई-लाइब्रेरी स्थापित करने की मांग

कोसली। कोसली की संत कबीर जन अंबेडकर शिक्षा समिति के प्रधान ओमप्रकाश डाबला ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को पत्र भेजकर प्रदेश की सभी अनुसूचित जाति चौपालों में ई-लाइब्रेरी स्थापित करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के अनुसूचित जाति तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के युवाओं और विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा डिजिटल अध्ययन की सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए यह पहल महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

कॉलेज को इस सत्र से 4 नए सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्स मिले

कृषि कॉलेज में एडमिशन के आवेदन 15 जून तक

छह विषय में एमएससी व 5 में कर सकते पीएचडी

बीएससी 4 वर्षीय ऑनर्स एग्रीकल्चर के लिए एंट्रेंस टेस्ट 5 जुलाई को होगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। बावल स्थित कृषि महाविद्यालय। फोटो : हरिभूमि

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के अर्न्तगत कृषि कॉलेज बावल में एडमिशन के लिए आवेदन प्रक्रिया चल रही है। आवेदन की प्रक्रिया 15 जून तक जारी रहेगी। कृषि कॉलेज में इस बार 4 नए सर्टिफिकेट और एक डिप्लोमा कोर्स मिले है, जिनमें इसी सत्र से एडमिशन किए जा रहे है। कृषि कॉलेज बावल में अभी दो पाठ्यक्रम चल रहे हैं। विद्यार्थी 10वीं के बाद 6 वर्षीय बीएससी ऑनर्स एग्रीकल्चर और 12वीं के बाद 4 वर्षीय बीएससी एग्रीकल्चर के अलावा एमएससी व पीएचडी कर सकते हैं। विद्यार्थियों के दाखिले हिसार यूनिवर्सिटी के अंतर्गत होने वाले टेस्ट के आधार पर होंगे। इन पाठ्यक्रमों के लिए जुलाई माह में टेस्ट होंगे। बीएससी 4 वर्षीय ऑनर्स एग्रीकल्चर के लिए एंट्रेंस टेस्ट 5 जुलाई को होगा। वही बीएससी ऑनर्स 6 वर्षीय एग्रीकल्चर में प्रवेश के लिए 19 जुलाई को टेस्ट होगा। टेस्ट हिसार यूनिवर्सिटी में कराए जाएंगे। रिजल्ट बाद काउंसलिंग प्रक्रिया होगी। पोस्ट ग्रेजुएट व पीएचडी के लिए टेस्ट की अलग प्रक्रिया रहेगी।

मिशन एडमिशन

कोर्स की फीस 30 हजार रुपये

कृषि कॉलेज को इस सत्र से एक साल का डिप्लोमा कोर्स भी मिला है, जिसमें पीजी डिप्लोमा इन क्वालिटी सीड प्रोडक्शन शामिल है। इसमें योग्यता बीएससी या बीएससी ऑनर्स एग्रीकल्चर है। इस कोर्स की फीस 30 हजार रुपये हैं। इसमें दो सेमेस्टर होंगे।

छात्र छह विषय में कर सकते एमएससी

कृषि कॉलेज में 10वीं पास विद्यार्थियों के लिए 6 वर्षीय बीएससी एग्रीकल्चर ऑनर्स के पाठ्यक्रम में 55 सीटें हैं और 12वीं पास के लिए 4 वर्षीय बीएससी एग्रीकल्चर में 25 सीटें हैं। बावल कृषि अनुसंधान केंद्र में चल रहे कृषि कॉलेज में विद्यार्थी 6 विषय में एमएससी कर सकते हैं। विद्यार्थी सीड साइंस टेक्नोलॉजी, एग्रोनोमी, सोशल साइंस, फोरेस्ट्री, कीट विज्ञान व प्लांट पैथॉलाजी में एमएससी कर सकते है, जिसमें 15 सीटें उपलब्ध हैं। इसके अलावा कॉलेज में 5 विषयों में पीएचडी कर सकते है, जिसमें एग्रोनोमी, कीट विज्ञान, प्लांट पैथोलॉजी, मृदा विज्ञान व फोरेस्ट्री शामिल हैं। इनमें प्रत्येक में एक-एक सीट ही उपलब्ध हैं।

हिंदी व अंग्रेजी दोनों में पढ़ाई करवाई जाएगी

कॉलेज में मधुमक्खी पालन, वर्मी कंपोस्ट, फ्रूट्स एंड वेजिटेबल पर्यवेक्षण व गार्डनिंग एंड नर्सरी मैनेजमेंट चार नए सर्टिफिकेट कोर्स भी मिले हैं। ये कोर्स 6 महीने के रहेंगे। इनमें योग्यता 10वीं पास है और प्रत्येक की फीस 3500 रुपये निर्धारित की गई है। इसमें हिंदी व अंग्रेजी में दोनों में ही पढ़ाई करवाई जाएगी।

ऑनलाइन आवेदन

दाखिले के लिए ऑनलाइन आवेदन जारी कृषि कॉलेज में दाखिले की प्रक्रिया चल रही है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत इस बार नए कोर्स भी मिले हैं। इच्छुक छात्र इन कोर्सों के लिए आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन के लिए एलीकेशन फार्म यूनिवर्सिटी की वेबसाइट एचएयूएसीइन व एडमिशंसएचएयूएसीइन पर उपलब्ध है।

-डा. नरेश कौशिक, प्राचार्य, कृषि कॉलेज

रेवाड़ी। सीएम आवास पर मौजूद नंबरदार। फोटो : हरिभूमि

मांगों को लेकर मुख्यमंत्री से मिले प्रदेश के नंबरदार

- सीएम से नए नंबरदारों की जल्द नियुक्ति करने व आयु सीमा एवं मेडिकल फिटनेस की शर्त को हटाने की मांग की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

हरियाणा के नंबरदारों ने डा. योगी अनूपनाथ राष्ट्रीय संयोजक अखिल भारतवर्षीय जोगी नाथ महासभा की अगुवाई में चंडीगढ़ स्थित आवास पर मुख्यमंत्री नायब सिंह से मुलाकात की। एसोसिएशन के सदस्यों ने सीएम से नए नंबरदारों की जल्द नियुक्ति करने तथा आयु सीमा एवं मेडिकल फिटनेस की शर्त को हटाने की मांग की।

प्रदेश संयोजक नंबरदार वेलफेयर एसोसिएशन सतीश नंबरदार औलांत ने बताया की बैठक में हरियाणा के विभिन्न जिलों के अध्यक्षों ने भाग लिया। मुख्यमंत्री ने नंबरदारों की मांगों को जल्द पूरा करने का आश्वासन दिया। डा. अनूप नाथ ने नंबरदारों की न्यायोचित मांगों एवं सामाजिक मुद्दों पर मुख्यमंत्री आवास पर अधिकारियों से चर्चा की।

ये रहे मौजूद

इस बैठक में डा. विजय सिंह चौहान, उदयराज राव जिला अध्यक्ष रेवाड़ी, नरेश यादव नंबरदार गुरुग्राम, दलीप सिंह नंबरदार सोहना, कश्मीरी लाल अम्बाला, राजेश यादव चरखी दादरी, सतबीर सिंह कैथल, गुरदीप सिंह सिरसा, हीरालाल नंबरदार पूर्व प्रदेश महामंत्री भाजपा एससी मोर्चा, सुरेन्द्र जोगी पानीपत, तहसील प्रधान जसवंत सिंह, महासचिव धर्मवीर मुरादपुरी, तहसील प्रधान कृष्ण कुमार, प्रेस प्रवक्ता जोगेंद्र राव, ओमदत्त शर्मा फरीदाबाद व गुरबचन सिंह नंबरदार मौजूद थे।

साहबी बैराज के दूषित पानी के मामले में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग का दखल, जांच के दिए आदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

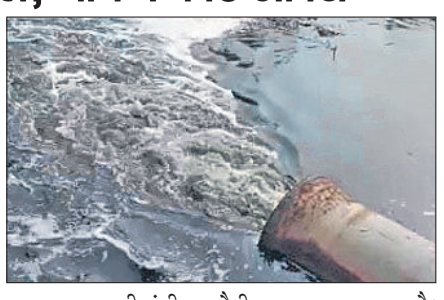

जिले में पर्यावरणीय लापरवाही से जुड़े गंभीर मामले में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने संज्ञान लेते हुए हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को जांच कर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। साहबी बैराज मसानी में विभागों की ओर से स्थापित करीब 6 सीवरेज शोधन संयंत्रों यानि एसटीपी से प्रदूषित पानी छोड़े जाने की शिकायत पर आयोग ने संज्ञान लिया हैं। गांव खरखड़ा निवासी कार्यकर्ता प्रकाश यादव की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव, हरियाणा के पर्यावरण मंत्री राव नरबीर सिंह तथा केंद्रीय एवं राज्य प्रदूषण नियंत्रण विभागों को मामले को लेकर भेजी गई थी। प्रकाश यादव का आरोप है कि रेवाड़ी क्षेत्र के कई सरकारी विभागों के सीवरेज शोधन संयंत्र निर्धारित मानकों के अनुरूप कार्य नहीं कर रहे हैं। शोधन के बाद वर्तमान में लगातार गंदा पानी साहाबी बैराज में छोड़ा जा रहा है, जिससे जल स्रोत लगातार प्रदूषित हो रहे हैं। कभी जल संरक्षण और भूजल पुनर्भरण का प्रमुख केंद्र माना जाने वाला साहबी बैराज आज प्रदूषण की गंभीर चुनौती का सामना कर रहा है। यह मामला पहले से ही एनजीटी में विचाराधीन है। इस मामले में करीब 15 प्रतिवादी पक्ष शामिल हैं। प्रकाश यादव का कहना है कि एनजीटी में मामला लंबित होने के बावजूद जमीनी स्तर पर अपेक्षित सुधार दिखाई नहीं दे रहे हैं। जलवायु प्रदूषण की समस्या से प्रभावित दर्जनो गांवों के लोगों का कहना है कि बैराज में प्रदूषित पानी पहुंचने से भूजल की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले वर्षों में यह समस्या स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों के लिए गंभीर संकट का रूप ले सकती है।

पानी कुदरत का दिया हुआ अनमोल तोहफा एक-एक बूंद का करें सदुपयोगः परमार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। ग्राम सभा में लोगों को जानकारी देती विभाग की टीम। फोटो : हरिभूमि

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की टीम ने जिले के विभिन्न ब्लॉकों में ग्राम सभाओं का आयोजन कर जल संरक्षण एवं स्वच्छता का संदेश दिया। विभाग के जिला सलाहकार योगेंद्र परमार ने नाहड खंड के गांव जुड्डी में ग्रामीणों को पेयजल व्यवस्था की रखरखाव एवं संचालन नीति की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमें आने वाली पीढ़ी के लिए पानी की बूंद-बूंद बचानी होगी। पानी कुदरत का दिया हुआ अनमोल तोहफा है, अगर हमने आज पानी नहीं बचाया तो आने वाली पीढ़ी पानी के लिए तरस जाएगी। इस अवसर पर सरपंच अजीत कुमार, ग्राम सचिव नवीन व पंप चालक विजेंद्र उपस्थित थे। खंड धारूहेड़ा के गांव डवाना में कार्यक्रम की अध्यक्षता गांव की सरपंच सुशीला देवी व ग्राम सचिव राजकुमार ने की। जन स्वास्थ्य विभाग के खंड संयोजक मनोज कुमार ने कहा कि जल संरक्षण, पौधारोपण एवं अन्य सामाजिक कार्यों से जुड़कर समाज की सेवा और प्रकृति की सेवा की जा सकती है। कार्यक्रम में मनीषा, नीलम सुरेश, कमलेश, निर्मला, आंगनवाड़ी वर्कर्स, राजबाला देवी, राजकरण, रामनिवास, धर्मबीर, लोकेश व लालाराम मौजूद थे।

खंड डहीना के गांव लुहाना में खंड संयोजक जितेंद्र ने ग्रामीणों को अधिक से अधिक पौधे लगाने, उनकी नियमित देखभाल करने तथा पर्यावरण को स्वच्छ एवं हरा-भरा बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने ग्रामीणों से जल संरक्षण, गांव में खुले नलों पर टोंटियां लगाने, पानी की अनावश्यक बबार्दी रोकने तथा प्रत्येक घर में जल बचाने की आदत विकसित करने के लिए अपील की। बावल खंड के गांव सुलखा में बीआरसी विनोद कुमार ने ग्रामीणों को जानकारी दी। गांव के सरपंच सुधीर कुमार ने जल स्रोतों की स्वच्छता बनाए रखने, वर्षा जल संचयन को अपनाने तथा पौधे लगाने का आह्वान किया।

राज स्कूल में स्पोर्ट्स टूर्नामेंट में शिक्षकों ने दिखाई प्रतिभा

रेवाड़ी। राज इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को स्टाफ सदस्यों के लिए स्टाफ स्पोर्ट्स टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। टूर्नामेंट की थीम प्ले टूगेदर, विन टूगेदर रखी गई। टूर्नामेंट का उद्देश्य स्टाफ के बीच सौहार्द, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और शारीरिक सजगता को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर महिला व पुरुष दोनों वर्गों की बैडमिंटन, कैरम और शतरंज प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। सभी प्रतिभागियों ने खेल भावना का परिचय देते हुए न केवल प्रतिस्पर्धा की, बल्कि एक-दूसरे का उत्साहवर्धन भी किया। समापन पर स्कूल के चेयरमैन राजेंद्र सैनी ने विजेता एवं उपविजेता प्रतिभागियों को ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस मौके पर स्कूल निदेशक नवीन सैनी ने प्रतिभागियों की मेहनत और खेल भावना की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन स्टाफ के बीच आपसी समन्वय को सुदृढ़ करते हैं।

हाइवे पर सड़क निर्माण एवं मरम्मत कार्यों से धूल के गुब्बार बने परेशानी

- निर्माण एजेंसी की ओर से नियमित रूप से पानी का छिड़काव नहीं किया जा रहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| धारूहेड़ा

रेवाड़ी। बेस्टेक सिटी सेंटर से सांवरिया ढाबा के बीच उड़ती धूल से प्रभावित क्षेत्र। फोटो : हरिभूमि

दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बेस्टेक सिटी सेंटर से सांवरिया ढाबा होते हुए हीरो कंपनी तक धूल के गुब्बार लोगों के लिए गंभीर समस्या बन गए है। सड़क निर्माण एवं मरम्मत कार्यों के दौरान धूल नियंत्रण के लिए आवश्यक उपाय नहीं किए जाने से आसपास के आवासीय क्षेत्रों, दुकानों और राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय निवासियों ने कहा कि निर्माण एजेंसी की ओर से नियमित रूप से पानी का छिड़काव नहीं किया जा रहा है। कई बार शिकायत करने के बाद केवल औपचारिकता निभाते हुए एक-दो बार पानी का छिड़काव कर दिया जाता है, लेकिन इसके बाद फिर से पूरे क्षेत्र में धूल उड़ने लगती है। दिनभर उड़ने वाली धूल के कारण घरों में गंदगी जमा हो रही है तथा लोगों को आंखों में जलन, खांसी और सांस लेने में दिक्कत जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

क्षेत्र के लोगों का कहना है कि हाइवे के दोनों ओर बड़ी संख्या में आवासीय कॉलोनियां, व्यावसायिक प्रतिष्ठान और औद्योगिक इकाइयां स्थित हैं। ऐसे में धूल प्रदूषण का प्रभाव हजारों लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। गर्मी के मौसम और तेज हवाओं के चलते स्थिति और अधिक गंभीर हो गई है। मामले को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता प्रकाश यादव खरखड़ा ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण तथा हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों को शिकायत भेजकर निर्माण एजेंसी के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। उन्होंने निर्माण कार्य के दौरान पर्यावरणीय मानकों का पालन करने तथा धूल नियंत्रण के लिए नियमित रूप से पानी का छिड़काव कराने की मांग की।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 8291554800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज़ पर मान्य। अन्य किसी साईज़ के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

कब्जाधारियों को एक सप्ताह का दिया समय, इसके बाद होगी कार्रवाई

वन विभाग ने शुरू की ग्रीन बेल्ट से अवैध कब्जे हटाने की मुहिम, 25 को थमाए नोटिस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। बावल रोड पर कब्जाधारियों को नोटिस देते हुए। फोटो : हरिभूमि

वन विभाग की ओर से शनिवार को वन भूमि पर व्याप्त अतिक्रमण को हटाने के लिए अभियान चलाया गया। विभाग की टीम ने बावल रोड, गढ़ी बोलनी रोड, रेवाड़ी-नारनौल रोड तथा सचिवालय के आसपास स्थित वन भूमि पर अतिक्रमण करने वाले लोगों को नोटिस भी दिए। विभाग की टीम ने अभियान के दौरान करीब 25 लोगों को नोटिस देकर एक सप्ताह में ग्रीन बेल्ट से अपना सामान हटाने के निर्देश दिए है। वन मंडल अधिकारी दीपक नंदा ने कहा कि अरावली और वन भूमि किसी व्यक्ति विशेष की नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की साझा धरोहर है। वन भूमि पर अतिक्रमण को लेकर लोगों को पहले ही नोटिस दिए जा जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग कानूनी कार्रवाई का इंतजार करने के बजाय स्वेच्छा से वन भूमि को खाली कर पर्यावरण संरक्षण के अभियान में सहयोग दें। उन्होंने कहा कि शहर में अनेक स्थानों पर ग्रीन बेल्ट में रेहड़ी, ढाबे, लोहार व अन्य लोगों ने कब्जे किए हुए है। जल्द ही ग्रीन बेल्ट को अतिक्रमण मुक्त किया जाएगा। उन्होंनक कहा कि नागरिक ग्रीन बेल्ट में कब्जे न करके विभाग का सहयोग करें। शनिवार को अभियान में ब्लॉक ऑफिसर संदीप, वन रक्षक संजय सिंह व अंशुल शामिल थे।

अवैध कब्जे नहीं हटाए तो होगी कार्रवाई

रेवाड़ी रेंज के आरएफओ संदीप कुमार ने कहा कि शहर की सड़कों के साथ बनी ग्रीन बेल्ट वन विभाग के अधीन है। वन मंत्री राव नरबीर के आदेश पर वन भूमि पर अवैध कब्जे करने वालों को नोटिस दिए गए हैं। अतिक्रमणकारियों को एक सप्ताह का समय दिया गया है, अगर फिर भी उन्होंने अवैध कबजे नहीं हटाए तो कार्रवाई की जाएगी।

युवा देश का भविष्य, नशे जैसी बुरी आदतों से हमेशा दूर रहेंः रामपाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

पुलिस की नशा मुक्ति टीम के जिले को नशामुक्त बनाने की दिशा में प्रयास लगातार जारी है। पुलिस टीम ने शनिवार को अभियान के दौरान गांव सुठाना व सुठानी में ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया। इस मौके पर ग्रामीणों को साइबर अपराधों व यातायात के नियमों की भी जानकारी दी गई। इस अवसर पर इंस्पेक्टर रामपाल ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है। युवा देश का भविष्य है, इसलिए उन्हें पढ़ाई, खेल और अपने सपनों में ध्यान लगाकर नशे जैसी बुरी आदतों से हमेशा दूर रहना चाहिए। उन्होंने ग्रामीणों को साइबर अपराध के खतरों से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि साइबर अपराधी फोन कॉल, सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से व्यक्तिगत जानकारी जैसे ओटीपी व पासवर्ड आदि हासिल करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में सभी को सतर्क रहना चाहिए और किसी भी अनजान व्यक्ति से अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। किसी भी साइबर ठगी होने पर साइबर राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें। पुलिस टीम ने ग्रामीणों को यातायात नियमों की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वाहन चलाते समय नियमों का पालन करना जरूरी है। हेलमेट, सीट बेल्ट का प्रयोग और यातायात संकेतों का पालन हमारी सुरक्षा के लिए अनिवार्य है।

रेवाड़ी। ग्रामीणों को जागरूक करती पुलिस टीम। फोटो : हरिभूमि

फीफा वर्ल्ड कप 2026
रोमांच-जुनून का ग्रैंड इवेंट

48 देशों के 1248 खिलाड़ी, फीफा वर्ल्ड कप-2026 को हासिल करने के लिए आगामी 11 जून से 19 जुलाई तक एक-दूसरे से मुकाबला करेंगे। इस दौरान सिर्फ आयोजक देशों में ही नहीं पूरी दुनिया में रोमांच और जुनून का सुरूर छाया रहेगा। इस ग्रैंड ग्लोबल स्पोर्ट इवेंट में इस बार क्या कुछ होगा खास, क्या होगा पहली बार, इसके तमाम पहलुओं पर एक नजर।

कवर स्टोरी
साशा

इसी सप्ताह 11 जून से फुटबॉल के सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन फीफा वर्ल्ड कप का आगाज हो रहा है, जो 19 जुलाई 2026 तक चलेगा। 11 जून से 19 जुलाई 2026 के बीच दुनिया फुटबॉल के रंग में रंगी रहेगी। भले भारत की फुटबॉल टीम अब तक के बेस्ट 48 टीमों वाले विश्व कप का हिस्सा न हो, लेकिन भारत भी इस जुनून का हिस्सा होगा। भारत में इस दौरान तूफानी दिन नहीं रातें होंगी, क्योंकि अमेरिका और लैटिन अमेरिका में फीफा वर्ल्ड कप के मैच जब खेले जाएंगे, उस समय भारत में दिन नहीं रात होगी।

दिखेगा खेलप्रेमियों का उमंग

फुटबॉल के इस विश्व कप को लेकर पूरी दुनिया में गहमा-गहमी अपने चरम पर पहुंच चुकी है। क्योंकि फुटबॉल के तूफान का रिश्ता सिर्फ खेल भर से नहीं होता, वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था, संचार, तकनीक, वैश्वीकरण, पर्यटन आदि से भी इसका उतना ही संबंध होता है, जितना खेल से। यही कारण है कि दुनिया की धड़कनें फुटबॉल को लेकर बहुत तेज हो चुकी हैं। आने वाले दिनों में स्टेडियमों की रोशनी आसमान को बार-बार चमकाती दिखाई देगी। सड़कों पर रात-रात भर जश्न होगा। करोड़ों और कई बार तो अरबों लोग एक साथ टीवी स्क्रीन से चिपके होंगे।

जुनून का महाविस्फोट

केवल रियल वर्ल्ड में ही नहीं सोशल मीडिया पर भी आगामी दिनों में हर दिन नया इतिहास लिखा जाएगा और ऐसा हो भी क्यों न? दुनिया का सबसे बड़ा खेल महाकुंभ के आयोजन में ऐसा होना स्वाभाविक ही है। जानकार जानते हैं कि यह सिर्फ फुटबॉल के रोमांच की उमंग भर नहीं होगी, इसमें शामिल होंगे भावनाओं के ज्वार-भाटे, राष्ट्रवाद, तकनीक, अरबों डॉलर का कारोबार, इस सबके चलते ग्लैमर और जुनून का महाविस्फोट साबित होगा 2026 का फीफा वर्ल्ड कप।

तीन देशों में होगा आयोजन

शायद यह अकेली ऐसी खेल घटना होगी, जिसकी गूंज इस वर्ल्ड कप के दौरान दुनिया के हर कोने में सुनी जाएगी। इस बार तो ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि आज तक कभी भी 48 फुटबॉल टीमें एक साथ विश्व कप को जीतने मैदान में नहीं उतरी थीं। सिर्फ यही इस महाकुंभ की खासियत नहीं होगी बल्कि पहली बार इस खेल महाकुंभ का आयोजक कोई एक देश या दो देश नहीं बल्कि तीन देश होंगे। जी हां, जून 2026 से शुरू हो रहे फीफा वर्ल्ड कप फुटबॉल के मेजबान अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको होंगे यानी सही मायनों में यह रोमांच का ग्लोबल कर्निवाल होगा।

होंगे नए मेगा ग्लोबल एक्सपीरियंस

आकार में यह फुटबॉल विश्व कप अब तक सबसे बड़ा आयोजन होगा, क्योंकि इसमें 48 टीमें भाग ले रही हैं, जिनके 104 मुकाबले होंगे। इसके हर मुकाबले को देखने के लिए लाखों दर्शक स्टेडियमों में और करोड़ों टीवी स्क्रीन से सटे होंगे। अरबों लोग इसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर फॉलो करेंगे और हां, इस बार के फुटबॉल विश्व कप को जितने विज्ञापन मिले हैं और जितनी स्पोंसरशिप इस कप को मिली है, उतने विज्ञापन और स्पोंसरशिप आजतक दुनिया के किसी भी बड़े से बड़े टूर्नामेंट को नसीब नहीं हुए।

यह सचमुच फीफा के इतिहास का मेगा ग्लोबल एक्सपीरियंस होगा। यह ऐसा विश्व कप होगा, जिसमें एआई आधारित कैमरे, रियल टाइम डेटा एनालिसिस, स्मार्ट स्टेडियम और अत्याधुनिक प्रसारण तकनीक बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होंगी यानी दर्शक सिर्फ मैच नहीं देखेंगे डिजिटल फुटबॉल के रोमांच से भी दो-चार होंगे। शायद इसलिए अब कहा जा रहा है फुटबॉल खेल नहीं, अब यह एक विश्व संस्कृति बन चुकी है और ऐसा हो भी क्यों न, फुटबॉल के अलावा और भला कौन-सा ऐसा खेल है, जो अमीर-गरीब, भाषा-धर्म और सीमाओं से उठकर लोगों को जोड़ देता है। ब्राजील की गलियों से लेकर अफ्रीका के गांवों तक यूरोप के पबों से लेकर भारत के कस्बों तक इस आगामी एक महीने तक हर जगह फुटबॉल का यह जुनून दिखेगा।

इकोनॉमी को मिलेगा बूम

इस बार का विश्व कप अरबों डॉलर फुटबॉल इकोनॉमी का मॉडल भी होगा यानी, यह केवल खेल नहीं बल्कि विशाल आर्थिक इंजन भी होगा। विशेषज्ञों के मुताबिक 2026 का फुटबॉल विश्व कप पर्यटन उद्योग, होटल व्यवसाय, एयरलाइंस, विज्ञापन, स्पोर्ट्स मर्चेनडाइज और डिजिटल स्ट्रीमिंग में रिकॉर्ड कारोबार पैदा करेगा।

भारत में भी बढ़ रही दीवानगी

खुशी की बात यह है कि भारत में भी फुटबॉल करवट ले रहा है। पिछले दशक में फुटबॉल का जुनून तेजी से बढ़ा है। इंडियन सुपर लीग और यूरोपीय क्लब फुटबॉल की लोकप्रियता में युवाओं में इस खेल को लेकर एक नई तरह की दीवानगी पैदा हुई है। केरल, पश्चिम बंगाल, गोवा और उत्तर-पूर्व के राज्यों में तो विश्व कप के दौरान किसी त्योहार के माफिक माहौल हो जाता है।

कई गांवों में तो ब्राजील और अर्जेंटीना के झंडे तक दिखाई देते हैं। यह राष्ट्रवाद के साथ कोई विश्वासघात नहीं बल्कि फुटबॉल के जुनून का नशा है। इस दौरान भारत में भी पूरे समय फुटबॉल का जुनून देखने को मिलेगा। दर्शकों और डिजिटल व्यूअरशिप की एक महाशक्ति है अपना देश, इस लिहाज से भारत भी इस विश्व कप का बड़ा और अंतरंग हिस्सा होगा। *

रोनाल्डो का होगा आखिरी वर्ल्ड कप!

2022 के फुटबॉल विश्व कप को लोगों ने लियोनेल मैसी के जादू के रूप में याद रखा। लेकिन 2026 का विश्व कप शायद नई पीढ़ी के उदय का मंच होगा। यह वह महाकुंभ होगा, जहां नई पीढ़ी अपने आगाज का शंखनाद करेगी और इस बार दुनिया की नजरें खासतौर पर इन खिलाड़ियों पर रहेंगी- क्यालियन मबापे, जूड बेलिंघम, एर्लिंग हालैंड और विनीसियस जूनियर। फुटबॉल के जानकार मान रहे हैं कि 2026 का फीफा विश्व कप पोस्ट मैसी-रोनाल्डो युग की असली शुरुआत होगा। हालांकि करोड़ों प्रशंसकों की उम्मीद है कि क्रिस्टियानो रोनाल्डो आखिरी बार विश्व कप में दिखेंगे। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक यह सौ फीसदी उम्मीद है कि रोनाल्डो अपना आखिरी विश्व कप खेलेंगे, जो कि संभवतः उनके करियर का आखिरी वर्ल्ड कप होगा। उनके होने की अभी तक उम्मीद इसलिए बरकरार है, क्योंकि वह लगातार पुर्तगाल की टीम का हिस्सा बने हुए हैं और पुर्तगाल ने विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर लिया है। हाल में ईफा नेशनल लीग में भी रोनाल्डो ने शानदार प्रदर्शन किया है। इससे भी उनके होने की उम्मीद बनती है और ऐसा हुआ तो वह रिकॉर्ड छठा फीफा वर्ल्ड कप खेलेंगे। इसके पहले वह 2006, 2010, 2014, 2018 और 2022 का विश्व कप भी खेल चुके हैं। तो उम्मीद करिए कि यह रोनाल्डो की अंतिम महान यात्रा हो। पुर्तगाल के कप्तान ब्रूनो फर्नांडिस ने भी कहा है कि टीम रोनाल्डो को विश्व कप ट्रॉफी देकर विदा करेगी। दो दशकों से अधिक से रोनाल्डो इस महान खेल का हिस्सा हैं, उन्होंने खेल से मिलने वाली लगभग हर चीज हासिल कर ली है। विभिन्न देशों के लीग खिताब, चैंपियंस लीग, बैलोन डि'ओर, अंतरराष्ट्रीय रिकॉर्ड और एक ऐसा करियर जो 25वें सीजन तक फैला हुआ है और एक हजार गोलों की ओर बढ़ रहा है।

कविता
पुरुषोत्तम व्यास

पारिजात के फूल

बड़ा अजीब-सा महसूस करता
जब से उनके बारे में
जान पाया
निशा में खिलते
भोर में जाते झर
लगता
निशा में कोई उनसे अनुराग भरी
बातें करता होगा
सुबह फिर मिलने का वादा कर
चला जाता होगा
उसी प्रेम की याद में झर जाते होंगे
फिर भी
खिले-खिले मनभावन खुशबू लेकर
स्वर्ग लोक के फूल।

लघुकथा / संजीव ठाकुर

दुकानदार

एआई इमेज

वह कपड़ों की दुकान थी, जिसमें ज्यादातर पुरुषों के लिए पैंट और शर्ट के कपड़े मिलते थे। एक ग्राहक अकसर उस दुकान पर आया करता था। एक बार जब वह अपने लिए पैंट-शर्ट के कपड़े खरीद चुका, दुकानदार बोला, 'और कुछ चाहिए सर? हमारे यहां ओढ़ने-बिछाने की चादरें भी मिलती हैं। आप देखना चाहेंगे? शहर की किसी भी दुकान की तुलना में यहां चादरें आपको सस्ती पड़ेंगी! डबल बेड की चादरें दिखाऊं?' ग्राहक बहुत दिनों से ओढ़ने की चादरें लेना चाह रहा था, लेकिन उसे ढंग की चादरें नहीं मिल रही थीं। वह बोला, 'डबल बेड की तो रहने दीजिए, ओढ़ने की दिखाइए।' दुकानदार ने अपने स्टाफ से चादरें मंगवाईं और चादरों की तारीफ करते हुए ग्राहक को दिखाने लगा, 'देखिए, इसकी क्वालिटी देखिए- ए वन!' ग्राहक ने सिंगल कलर की चादरें लेने की सोच रखी थी, लेकिन चादर के एक ओर डिजाइन बना देखकर उसका मन डोलने लगा। उसने दुकानदार से कहा, 'यह तो मुझे ओढ़ने की नहीं बिछाने की चादर लग रही है!'

'नहीं सर, ओढ़ने की ही है। ये देखिए, इसके चारों किनारों को किस तरह सिला गया है?' ग्राहक का मन डोल ही रहा था कि दुकानदार ने चादरों की कीमत बता दी, 'सिर्फ साढ़े चार सौ में दो चादरें हैं सर!' चादरों की कीमत सुनकर ग्राहक को सुखद आश्चर्य हुआ। सचमुच इतनी कम कीमत में चादरों का मिलना मुश्किल था। उसने दुकानदार से पचास रुपए कम करवाकर चादरें ले लीं। कुछ महीनों बाद उसी ग्राहक को बिछाने की चादरों की दरकार हुई। वह उसी दुकान पर पहुंच गया। डबल बेड की दो चादरें लेने के बाद उसने सिंगल बेड पर बिछाने की चादरें दिखाने को कहा। दुकानदार ने चादरें मंगवाईं। ग्राहक उन्हें देखते ही बोला, 'ये बिछाने की हैं? पिछली बार तो आपने इसे ओढ़ने की कहकर मुझे दिया था?' 'ये चीज ही ऐसी है सर कि इसे ओढ़ने, बिछाने, दोनों कामों में लाया जा सकता है।' दुकानदार ने कहा और अपनी खीसें निपोर दीं! *

व्यंग्य / विनोद कुमार विक्की

कैमरा ऑन, स्माइल प्लीज!

अगली बार जब कोई कहे 'स्माइल प्लीज', तो समझ जाइए आपको कोई खुशी नहीं दी जा रही, आपकी 'छवि' ली जा रही है। आप खुश हों या न हों, अगर कैमरा सामने ऑन हो तो मुस्कुराना ही होगा।

गहन शोध, आधे-अधूरे निष्कर्ष और पूरे आत्मविश्वास के साथ यह सनसनीखेज खुलासा हुआ है कि एक फिल्म का लोकप्रिय गीत 'मुस्कुराने की वजह तुम हो' वाला 'तुम' कोई इंसानी काया नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली, किंतु भावशून्य उपकरण है। नब्बे फीसदी इंसान सिर्फ इसी उपकरण के सामने मुस्कुराते हैं। यह उपकरण कुछ और नहीं बल्कि कैमरा है। जी हां, वही कैमरा, जिसके सामने आते ही इंसान अपने समस्त दुःख-दर्द को ऐसे समेट लेता है, जैसे आम चुनाव के भाषण में नेताजी पिछले वर्ष की अधूरी घोषणाओं को समेट लेते हैं, और सरकार वित्तीय बजट में घाटा समेटती है। जैसे ही पेशेवर स्टूडियो के फोटोग्राफर द्वारा 'स्माइल प्लीज' का निर्देश प्राप्त होता है, या सेल्फी स्टिक पर टिके मोबाइल का फ्रंट कैमरा ऑन होता है, चेहरे पर जमी चिंता की धूल झट से उड़ जाती है और होंठों पर 3 से 5 सेंटीमीटर की मानक मुस्कान स्वतः चिपक जाती है।

यह मुस्कान इतनी अनुशासित होती है कि जाति, धर्म, लिंग, रंग, सब सीमाएं पार कर जाती है। नर, मादा, अन्य, काला, गोरा, सांवला आदि सबके चेहरे पर एक समान 'फोटो फ्रेंडली' लोकतंत्र दिखाई देता है। परंतु विडंबना देखिए, यह मुस्कान उतनी ही टिकाऊ होती है, जितने चुनावी वादे।

क्लिक होते ही मुस्कान का पुष्पक विमान सीधे वास्तविकता की शोक-वाटिका में क्रैश लैंडिंग कर देता है। फोटो में हम जितने खुश दिखते हैं, असलियत में उतने ही ईएमआई, महंगाई और बॉस के व्हाट्सएप मैसेज से त्रस्त होते हैं। उम्र से पहले ही जिम्मेदारी और परेशानियों के कारण चेहरे पर झुर्रियों की लक्ष्मण रेखाएं खिंच जाती हैं। सच तो यही है कि आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में मुस्कुराना एक 'इवेंट' बन चुका है, जो मुख्यतः कैमरे के सामने ही आयोजित होता है। लगता है जैसे भाग-दौड़ भरी जिंदगी और अति व्यस्तता के बीच मुस्कान ने स्वैच्छिक अवकाश ले रखा है।

कार्यालय में काम का दबाव, वरीय पदाधिकारी का तनाव, घर में 'घरेलू प्रेशर', बाजार की महंगाई और बैंक की ईएमआई, इन सबने मिलकर होंठों की नैसर्गिक पहचान यानी, मुस्कान को जैसे गिरवी रख दिया है। ऐसे में बेचारा इंसान जब-तब मुस्कुराने के लिए अवसर ढूंढ़ता फिरता रहता है। तभी संकटमोचक बनकर प्रकट होता है, कैमरा! वह बिना किसी शर्त के प्रेमी-प्रेमिका की भूमिका निभाते हुए सामने खड़ा हो जाता है और कहता है, 'आओ, लल्ला कुछ सेकेंड के लिए थोबड़े पर मुस्कुराहट लाओ ताकि हम उस छवि को कैद कर सकें।' बस फिर क्या, जो मुस्कान बेमियादी हड़ताल पर थी, वह भी तुरंत एक्टिव हो जाती है और चेहरे पर 'इमरजेंसी स्माइल' आ जाती है।

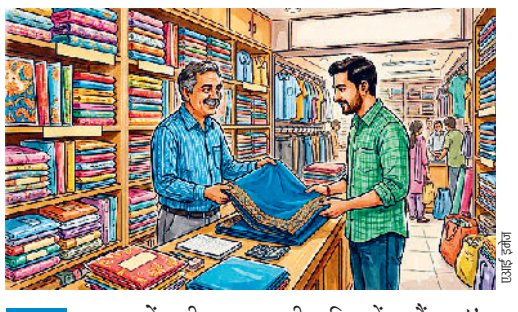

मजेदार बात यह है कि कैमरे के कारण हमें नकली मुस्कान हासिल होती है, जबकि कुछ घटनाएं स्वाभाविक (नेचुरल) मुस्कान का अवसर भी प्रदान करती हैं। दूसरों की असफलताओं पर, पड़ोसियों को दुःखी देखकर अथवा रिश्तेदारों के नुकसान या पतन पर भी एक हल्की-सी 'आंतरिक मुस्कान' जरूर उग आती है, जिसे हम सामाजिक संतुलन बनाए रखने के लिए चेहरे पर प्रकट नहीं होने देते। आत्मिक सुख के साथ हम मन ही मन उसका आनंद लेते रहते हैं। यद्यपि चलते-फिरते किसी परिचित चेहरे से सामना होने पर भी मुस्कुराने का अभिनय किया जाता है।

मुस्कुराहट के नवीनीकरण की जिम्मेदारी अब तो शहर में लगी तख्तियों ने अपने ऊपर ले रखी है, 'मुस्कुराइए, आप झुमरीतलैया में हैं', 'मुस्कुराइए, आप हाईटेक स्माइल सिटी में हैं!' असल में ये कोई साधारण संदेश नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अनुस्मारक हैं, 'भाई, यहां मुस्कुराना मत भूल जाना, वरना लोग पहचान लेंगे कि तुम सच में परेशान हो!' मनोचिकित्सक भी सलाह देते हैं, 'हंसते रहिए, मुस्कुराते रहिए।' इसी सलाह को उद्योग का रूप देते हुए लाफ्टर शो, हास्य कवि सम्मेलन और अब रील संस्कृति भी मैदान में उतर चुकी है। लोग हंसने के लिए वीडियो देखते हैं और वीडियो बनाने के लिए हंसते हैं, यह एक आत्मनिर्भर चक्र है। मुस्कान अब भाव नहीं, एक 'प्रोजेक्ट' बन चुकी है, जिसका उद्घाटन कैमरे के सामने होता है और समापन तुरंत बाद। इसलिए अगली बार जब कोई कहे 'स्माइल प्लीज', तो समझ जाइए आपको खुशी नहीं दी जा रही, आपकी 'छवि' ली जा रही है। अंततः निष्कर्ष यही है कि आप खुश हों या न हों, अगर कैमरा सामने ऑन हो तो मुस्कुराना ही होगा। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

स्मृतियों की कतरनें

वरिष्ठ साहित्यकार नवनीत मिश्र के छोटे-छोटे संस्मरणों की किताब 'कितना कुछ तो है' हाल में प्रकाशित होकर आई है। इसमें उन्होंने अपने बचपन से लेकर वर्तमान समय तक की छोटी-छोटी मधुर स्मृतियों की कतरनों को बहुत सलीके से संजोया है। इनसे गुजरते हुए यह साबित होता है कि उनके भीतर का सजग लेखक हमेशा, गहन संवेदनशीलता के साथ अपने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं और लोगों को देखता, महसूसता और उनके संग जीता रहा है। इन संस्मरणों को लिखने का अंदाज कहीं भी बनावटी नजर नहीं आता है। अपने भीतर के कमजोर पक्षों को भी उन्होंने पूरी ईमानदारी से स्वीकार किया है। 'बहिन जी', 'चोर पकड़ा गया' और 'एक थे पलाली बाबू' में उनके बचपन की मासूमियत भरी छवि उजागर हुई है तो युवावस्था में कार्यक्षेत्र में 'रहमान साहब' जैसे लोगों ने उनको प्रभावित किया। इसी तरह रिटायरमेंट के बाद कार ड्राइविंग सीखने के दौरान प्रशिक्षक से मिला अनुभव 'बैकव्यू मिरर' भी वे भूल नहीं पाए।

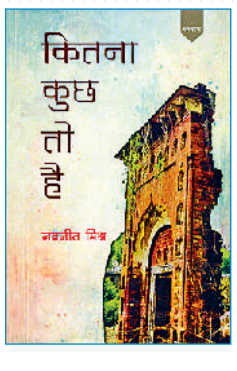

आमतौर पर साहित्यिक संस्मरण प्रसिद्ध हस्तियों पर केंद्रित होते हैं, लेकिन इस पुस्तक के संस्मरणों में जिस तरह से लेखक ने अपने जीवन में शामिल रहे सामान्य लोगों को सहृदयता से याद किया है, वह उनके भावुक व्यक्तित्व का परिचायक है। अपनी कहानियों की ही तरह बहुत सरल, सहज शैली में लिखे उनके ये संस्मरण, मन को छू लेते हैं। यह भी कह सकते हैं कि इन संस्मरणों में नवनीत जी की आत्मकथा स्पष्ट तौर पर झांकती हुई नजर आती है। *

पुस्तकः कितना कुछ तो है (संस्मरण), **लेखकः** नवनीत मिश्र, **मूल्यः** 450 रुपए, **प्रकाशकः** भावना प्रकाशन, दिल्ली

शिमला समर फेस्टिवल – 2026

सजेगी सांस्कृतिक रंगों की छटा

हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में आयोजित होने वाले सबसे बड़े सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है इंटरनेशनल शिमला समर फेस्टिवल। कल से शुरू हो रहे इस आयोजन में देश-विदेश के पर्यटक हिमाचल समेत देश की विविधरंगी संस्कृति की मोहक छटा से रूबरू हो सकेंगे। इस आयोजन की खासियतों पर एक नजर।

कल्चरल इवेंट
धीरज बसाक

जून की तपती गर्मी जब उत्तर भारत के मैदानी इलाकों को झुलसाने लगती है, तब हिमालय की गोद में बसा शिमला रंगों, संगीत और लोक संस्कृति के एक उत्सवी खुमार में डूब जाता है। आगामी 8 से 12 जून तक आयोजित होने वाला इंटरनेशनल शिमला समर फेस्टिवल इस बार केवल एक पर्यटन आयोजन नहीं बल्कि हिमाचल की सांस्कृतिक पहचान और लोकजीवन का एक बड़ा उत्सव बनकर सामने आ रहा है।

साढ़े छह दशक पुराना उत्सव: शिमला के ऐतिहासिक रिज मैदान और माल रोड पर होने वाला यह पांच दिनों का सांस्कृतिक महोत्सव, देशभर के पर्यटकों, कलाकारों और संस्कृति प्रेमियों को आकर्षित करता है। सन् 1960 में शुरू हुआ यह उत्सव, हिमाचल प्रदेश के सबसे पुराने सांस्कृतिक आयोजनों में से एक है। इसकी शुरुआत राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने और स्थानीय संस्कृति को मंच देने के उद्देश्य से की गई थी। समय के साथ यह आयोजन इतना लोकप्रिय हो गया कि आज इसे उत्तर भारत के प्रमुख ग्रीष्मकालीन सांस्कृतिक महोत्सवों में गिना जाता है।

शिमला समर फेस्टिवल इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उस भारत की तस्वीर प्रस्तुत करता है, जो आधुनिकता के साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों को भी संजोए रखना चाहता है। हिमालय की ठंडी हवाओं के बीच लोकनृत्य, संगीत, कला और परंपरा का यह संगम साबित करता है कि संस्कृति केवल इतिहास नहीं बल्कि वर्तमान और भविष्य की बड़ी ताकत है।

सांस्कृतिक विविधता के होंगे दर्शन: शिमला समर फेस्टिवल की सबसे बड़ी पहचान उसकी सांस्कृतिक विविधता है। यहां केवल हिमाचली लोककला ही नहीं बल्कि देश के विभिन्न राज्यों की लोक परंपराएं भी एक मंच पर दिखाई देती हैं। इस बार उत्तराखंड का चोलिया नृत्य, जम्मू-कश्मीर का गोजरी नृत्य, राजस्थान का भवई और घूमर नृत्य के साथ ही तिब्बती सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को भी शामिल किया जाएगा। इससे यह आयोजन देश की मिली-जुली संस्कृतियों की झांकी दिखाएगा। हिमाचल की प्रसिद्ध महानाटी और पारंपरिक नाटी नृत्य इस उत्सव का मुख्य आकर्षण माने जाते हैं। नाटी केवल एक लोकनृत्य नहीं बल्कि पहाड़ी समाज की सामूहिक सांस्कृतिक स्मृति है, जब सैकड़ों कलाकार एक साथ पारंपरिक वेशभूषा में नृत्य करते हैं, तो पूरा रिज मैदान जीवंत लोकचित्र में बदल जाता है। यही दृश्य हर वर्ष हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है।

नाटी लोकनृत्य करते स्थानीय कलाकार

होता है विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

आयोजित होते हैं ट्रेडिशनल फैशन शोज

माल रोड पर फेस्टिवल का विहंगम दृश्य

कलाकारों को मिलेगा अवसर: आयोजकों के अनुसार, इस साल लोकप्रिय गायकों और लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां हर शाम आयोजित की जाएंगी। इसके अलावा युवा कलाकारों को भी मंच दिया जाएगा। आयोजन के दौरान इस तरह की पहल स्थानीय प्रतिभाओं को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में मदद करेगी।

अर्थव्यवस्था में योगदान: यह उत्सव केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। इसके माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है। होटल, टैक्सी, रेस्त्रां, हस्तशिल्प व्यवसाय और स्थानीय बाजारों में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। शिमला का प्रसिद्ध लक्कड़ बाजार, हस्तनिर्मित लकड़ी के उत्पादों और स्थानीय शॉलों के लिए जाना जाता है, जहां इस दौरान काफी भीड़ दिखाई देती है। फूड फेस्टिवल भी इस आयोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां पर पर्यटकों को पारंपरिक हिमाचली व्यंजन जैसे सिड्डू, मदरा, बबरू और धाम का स्वाद लेने का अवसर मिलता है।

सांस्कृतिक संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम: शिमला समर फेस्टिवल, केवल एक पर्यटन कार्यक्रम नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम है। तेजी से बदलती जीवनशैली और डिजिटल मनोरंजन के दौर में ऐसे आयोजन स्थानीय परंपराओं को जीवित रखने का काम करते हैं। युवा पीढ़ी यहां लोकनृत्य, लोकसंगीत और क्षेत्रीय कलाओं से परिचित होती है, जिससे सांस्कृतिक विरासत आगे बढ़ती है। शिमला का रिज मैदान ब्रिटिश काल से ही विभिन्न तरह की सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है। यह ऐतिहासिक स्थल आज भी शहर की सांस्कृतिक पहचान बना हुआ है। इंटरनेशनल शिमला समर फेस्टिवल के दौरान जब शाम ढलते ही रोशनी से जगमगाता रिज मैदान, लोकसंगीत की धुनों से गूंजता है तो शिमला ही नहीं पूरे हिमाचल प्रदेश की उत्सवधर्मिता देखते ही बनती है। *

खास है इस बार का आयोजन

इस साल का इंटरनेशनल शिमला समर फेस्टिवल, कई दृष्टियों से खास और अलग होगा। इस आयोजन में लोकनृत्य, संगीत प्रस्तुतियां, कला प्रदर्शनियां, फ्लावर शो, फूड फेस्टिवल, ट्रेडिशनल माउंटेनियरिंग फैशन शो और विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक झलकियां देखने को मिलेंगी। इसके साथ ही पहली बार 'राइड ऑफ सेवन हिल्स' नामक हेलिकॉप्टर जॉय राइड भी शामिल की जा रही है, जिसके जरिए पर्यटक शिमला की सात पहाड़ियों का हवाई दृश्य देख सकेंगे।

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन

सफलता पाने के लिए टैलेंट और हार्ड वर्क तो जरूरी है ही, इसके साथ बिहेवियर कल्चर यानी व्यवहार संस्कृति भी मायने रखती है। क्या है बिहेवियर कल्चर, सक्सेस में क्या होती है इसकी भूमिका, आपको जरूर जानना चाहिए।

सक्सेस के लिए वर्क के साथ बिहेवियर कल्चर भी जरूरी

अधिकांश लोग मानते हैं कि सफलता सिर्फ प्रतिभाशाली यानी टैलेंटेड लोगों को ही मिलती है। लेकिन सच यह है कि सफलता सिर्फ टैलेंट से नहीं, बल्कि वर्क और बिहेवियर कल्चर से भी प्रभावित होती है। इन दोनों क्वालिटीज को अपनाकर एक औसत दर्जे का व्यक्ति या ऐसे लोगों की टीम भी सफलता हासिल कर सकती है। 'वर्क कल्चर' के बारे में तो लोग फिर भी जानते हैं लेकिन बिहेवियर कल्चर यानी व्यवहार संस्कृति को लेकर आपके मन में जिज्ञासा हो सकती है, इसलिए इसे समझना भी जरूरी है।

क्या होता है बिहेवियर कल्चर

बिहेवियर कल्चर का तात्पर्य उन तौर-तरीकों, सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और आचरण के नियमों से है, जो किसी समाज या समूह में व्यक्तियों के एक-दूसरे के साथ बातचीत करने और प्रतिक्रिया देने के तरीके को निर्मित करते हैं। डैनियल कॉयल ने अपनी पुस्तक 'द कल्चर कोड' में बेहतरीन टीमों और समूहों के सफल होने के पीछे के रहस्यों को उजागर किया है। डैनियल ने दुनिया की सबसे सफल टीमों का अध्ययन कर पाया कि उनकी सफलता तीन स्तंभों पर टिकी है-

सुरक्षा का निर्माण: टीम के सदस्यों को यह महसूस कराना कि वे सुरक्षित हैं और एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

कमियों को साझा करना: अपनी कमियों को स्वीकार करना ताकि आपसी विश्वास, सहयोग बढ़े।

उद्देश्य स्थापित करना: वर्तमान काम को भविष्य के एक साझा लक्ष्य या उद्देश्य से जोड़ना।

ऐसे अपनाएं बिहेवियर कल्चर

आप अपनी प्रोफेशनल या बिजनेस करियर में बिहेवियर कल्चर को कुछ इस तरह लागू कर सकते हैं-

अपनी कमियों को स्वीकारें: अकसर लोग अपनी गलतियों को छुपाते हैं ताकि वे कमजोर न लगें। लेकिन शोध बताते हैं कि जब लीडर अपनी कमजोरी साझा करता है, तो टीम के बीच परस्पर खुलापन और विश्वास बढ़ता है। जब आप कहते हैं, 'मैंने यहां गलती की, आपकी क्या राय है?' तो आप दूसरों को मदद करने और ईमानदारी दिखाने के लिए आमंत्रित करते हैं।

सुनने की कला विकसित करें: जब आप ध्यान से सुनते हैं, तो आप टीम में अपना महत्व बढ़ा लेते हैं। सुनते समय लोगों को बीच में न टोकें और वक्ता के विचारों को विस्तार देने वाले प्रश्न पूछें। जब कोई व्यक्ति महसूस करता है कि उसे गहराई से सुना गया है, तो उसका जुड़ाव और जिम्मेदारी का भाव बढ़ जाता है।

साझा लक्ष्य की शक्ति: यदि सबको पता है कि मंजिल कहां है, तो रास्ता आसान हो जाता है। अपनी टीम को याद दिलाते रहें कि उनका काम बड़े लक्ष्य में कैसे योगदान दे रहा है। टीम को सिर्फ 'क्या करना है' न बताएं, बल्कि 'क्यों करना है' पर भी जोर दें।

अहंकार को दूर रखें: सफल व्यवहार संस्कृति में 'पद' से ज्यादा 'विचार' को महत्व दिया जाता है। जहां हर व्यक्ति को अपनी बात रखने की आजादी होती है, वहीं नए आइडियाज जन्म लेते हैं।

छोटे व्यवहार, बड़ा बदलाव: समय पर आना, दूसरों की मेहनत की सराहना करना और कठिन समय में साथ खड़े होना। ये छोटी-छोटी आदतें और व्यवहार निवेश की तरह हैं, जो भविष्य में टीम की मजबूती के रूप में 'कंपाउंड इंटरेस्ट' देते हैं।

नकारात्मकता पर लगाएं लगाम: अगर कोई व्यक्ति लगातार नकारात्मकता फैला रहा है या दूसरों को नीचा दिखा रहा है, तो ऐसे व्यवहार को तुरंत नकारें ताकि समूह की सामूहिक ऊर्जा और विश्वास सुरक्षित रहे।

फीडबैक का सही तरीका अपनाएं: किसी को उसकी गलती नीचा दिखाने या डांटने के लिए नहीं बल्कि सुधार और उसे क्षमताओं का पूरा इस्तेमाल करने की प्रेरणा देने के लिए बताएं। गलती बताते हुए हमेशा यह जताएं कि आप फीडबैक इसलिए दे रहे हैं क्योंकि आपको उनकी क्षमता पर भरोसा है। *

ट्रेडिशन / अभिव्यक्ति त्रिवेदी

भारत समेत दुनिया के कई देशों के जनजातीय समुदायों में महिलाओं के लिए कुछ अजीबो-गरीब और कष्टप्रद परंपराएं प्रचलित हैं। इनमें से कुछ के बारे में जानिए।

अजब-अनोखी जनजातीय परंपराएं

प्राचीन काल से ही भारत सहित दुनिया के कई देशों में रहने वाले जनजातीय समाजों में अनेक ऐसी परंपराएं मौजूद रही हैं, जो शारीरिक तौर पर बहुत तकलीफदेह होती हैं। इनमें भी ज्यादातर पैनिक ट्रेडिशंस महिलाओं से जुड़ी हैं। ऐसी ही कुछ अजीबो-गरीब ट्रेडिशंस के बारे में यहां बता रहे हैं।

गले में धातु के छल्ले: म्यांमार देश में रहने वाली कायन जनजाति की महिलाएं अपने गले में पीतल या ब्रास धातु के बने छल्ले पहनती हैं। कहा जाता है कि इससे उनकी गर्दन जिराफ की गर्दन की तरह लंबी हो जाती है। ब्रास या पीतल की धातु के इन छल्लों का वजन करीब 20 किलो तक होता है। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इनको पहनकर महिलाएं कैसे रहती होंगी और कैसे खेतों में काम करती होंगी। वे महिलाएं अपने गले में ये छल्ले एक के ऊपर एक करके पहनती हैं। इसमें नीचे सबसे बड़े आकार का छल्ला होता है और ऊपर की तरफ पहने जाने वाले छल्ले छोटे होते जाते हैं। वहां पर बचपन से ही लड़कियों के गले में छल्ले डालने लगते हैं, जिससे उनके गले का आकार सुराहीनुमा और लंबा होता जाता है।

इस प्रथा के शुरू होने के पीछे यह मान्यता थी कि लंबी गर्दन वाली महिलाएं बदसूरत नजर आएंगी तो उसे दूसरी जनजाति के लोग अगवा नहीं करेंगे। इस तरह वो खुद को सुरक्षित रखने के लिए गर्दन लंबी करती थीं। इसके पीछे की एक मान्यता यह भी है कि जिन जंगली गांवों में ये लोग रहते हैं, वहां बाघ भी पाए जाते हैं, जो अकसर इंसानों पर हमला कर देते हैं। हमले में बाघ सबसे पहले इंसान की गर्दन पर हमला करते हैं, इसलिए यहां की महिलाओं ने अपने गले को धातु के छल्लों से ढंकना शुरू कर दिया।

काले दांत की परंपरा: ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार जापान में रहने वाली कुछ जनजातीय महिलाएं विवाहित होने पर अपने दांतों को काले रंग से रंगती थीं, जिसे 'ओहागुरो' कहा जाता था। ओहागुरो में महिलाओं द्वारा लोहे के बुरादे और सिरके के मिश्रण से दांतों को काला किया जाता था।

9वीं से 19वीं शताब्दी तक प्रचलित रही यह प्रथा सुंदरता, विवाह और उच्च सामाजिक स्थिति का प्रतीक थी। दांत काले करने का सबसे बड़ा उद्देश्य दांतों की सुरक्षा करना हुआ करता था। यह दांतों की सड़न को रोकने में मदद करती थी। इसमें उपयोग होने वाले मिश्रण में लौहतत्व और हर्बल टैनिन होते थे, जो दांतों को मजबूत बनाते और कीड़ों से बचाते थे। इसे आधुनिक डेंटल सीलेंट के समान माना जाता है।

जापान के अलावा वियतनाम, थाईलैंड, लाओस तथा फिलीपींस की हिल ट्राइब्स में भी ये परंपरा प्रचलित थी। यही नहीं, इंडोनेशिया और पेरू में जनजातियों द्वारा सांस्कृतिक पहचान के रूप में भी इसे अपनाया जाता था। हालांकि 1870 में जापान में इस परंपरा पर प्रतिबंध लगा दिया गया। दरअसल, पश्चिमी सौंदर्य मानकों और वहां की महारानी के बिना काले किए दांत दिखने के बाद यह बदलाव आया। धीरे-धीरे यह प्रथा केवल नाटकों और त्योहारों तक सीमित हो गई। आजकल, ओहागुरो को केवल कुछ जापानी त्योहारों, ऐतिहासिक फिल्मों आदि में ही देखा जा सकता है।

होंठों में प्लेट: इथियोपिया के ओमो घाटी में रहने वाली जनजातियों में से एक है मुर्सी जनजाति। ये लोग कई तरह के पारंपरिक वस्त्र और आभूषण पहनते हैं। इस जनजाति की महिलाओं द्वारा निचले होंठ में मिट्टी या लकड़ी की प्लेट (डिस्क) पहनना सुंदरता, परिपक्वता और सामाजिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है। 15 से 16 साल की उम्र की लड़कियों में इस परंपरा को किया जाता है। इसमें निचले होंठ को काटा जाता है, फिर घाव भरने तक गीले कपड़े से ढंककर रखा जाता है। फिर उसमें प्लेट फंसा दी जाती है। होंठ को खींचकर उसमें प्लेट डालने की यह प्रक्रिया बेहद दर्दनाक होती है।

होंठों में प्लेट पहनने का चलन अविवाहित लड़कियों और नवविवाहित महिलाओं में अधिक देखने को मिलता है। आमतौर पर इन्हें पुरुषों को भोजन परोसने, गायों का दूध दुहने और शादी जैसे महत्वपूर्ण अनुष्ठानों के दौरान पहना जाता है। इस प्लेट के कई अर्थ हैं। पहला, यह अत्यधिक सुंदरता का प्रतीक है। दूसरा, यह पति के प्रति निष्ठा का भी प्रतीक है इसीलिए पति को भोजन परोसते समय इसे बड़े गर्व से पहना जाता है। *

नाक में लकड़ी के प्लग लगाना

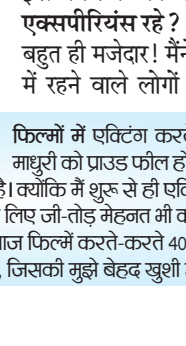

अपने देश के खूबसूरत राज्य अरुणाचल प्रदेश की घाटियों में रहने वाली अपतानी जनजाति अपनी अनोखी संस्कृति और परंपराओं के लिए मशहूर है। इस जनजाति की महिलाओं में चेहरे पर टैटू और नाक में दोनों ओर काली लकड़ी के प्लग लगाने की परंपरा रही है। यह अनोखी प्रथा इन्हें अन्य समुदायों से अलग करती है और उनकी एक अलग पहचान बनाती है। जहां आमतौर पर महिलाओं में नाक छिदवाना सुंदरता का प्रतीक माना जाता है, वहीं इन जनजातियों में यह प्लग पहनना आकर्षण और विशेष सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है।

बीते 4 जून को माधुरी दीक्षित नेने की फिल्म 'मां-बहन' नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है। फिल्म में दो यंग बेटियों की सिंगल मदर का रोल उन्होंने क्या सोचकर एक्सेप्ट किया? लंबे गैप के बाद कॉमेडी करके उन्हें कैसा लगा? फिल्मों में चार दशक गुजारने पर वे कैसा फील करती हैं? फिल्म और करियर से जुड़ी बातचीत माधुरी दीक्षित नेने से।

फिल्म 'मां-बहन' में मैं बिंदास मां बनी हूं: माधुरी दीक्षित नेने

खास मुलाकात / आरती सक्सेना

बॉलीवुड दिवा माधुरी दीक्षित नेने, अपनी खूबसूरत मुस्कान, शोख अदाओं और कमाल की अभिनय क्षमता के बल पर सालों से दर्शकों को दीवाना बनाती आई हैं। हर रोल को वह बेहतरीन तरीके से परफॉर्म करती हैं। माधुरी की एक्टिंग परफॉर्मेंस का कमाल एक बार फिर नेटफ्लिक्स पर हाल ही में रिलीज फिल्म 'मां-बहन' में दर्शकों को देखने को मिल रहा है। इस फिल्म में माधुरी दो बेटियों की सिंगल मदर का किरदार निभा रही हैं। लेकिन यह सिंगल मदर बेचारी नहीं बल्कि शोख अदाओं का जादू बिखेरने वाली बिंदास और सशक्त मां है। फिल्म में माधुरी के साथ तृप्ति डिमरी, रवि किशन, धरना दुर्गा, गीतांजलि कुलकर्णी, शार्दुल भारद्वाज और अरुणोदय सिंह भी हैं। इस फिल्म की कहानी पूजा तोलानी और सुरेश त्रिवेणी ने लिखी है। फिल्म को डायरेक्ट किया है सुरेश त्रिवेणी ने। पेश है माधुरी दीक्षित नेने से इस फिल्म को लेकर हुई बातचीत के प्रमुख अंश-

नेटफ्लिक्स पर रिलीज फिल्म 'मां-बहन' में कौन-सी बात आपको ऐसी लगी, जो आपने फिल्म में दो जवान बेटियों की सिंगल मदर की भूमिका निभाने का मन बना लिया?

इस फिल्म में भले ही मैं दो बेटियों की सिंगल मदर हूं, लेकिन मैं बेचारी और दुखियारी मां नहीं हूं, बल्कि इस फिल्म में मैं ऐसी मां बनी हूं, जो अपनी उम्र की परवाह न करते हुए एकदम ग्लैमरस और बिंदास दिखती है। फिल्म में मेरे किरदार का नाम रेखा है। रेखा अपना परिवार चलाने के लिए कभी साइबर कैफे तो कभी वाइन शॉप में काम करती है। साथ ही अपनी अदाओं से मर्दों को घायल करके अपना उल्लू भी सीधा कर लेती है। मेरा किरदार इस फिल्म में परंपरागत मां से बिल्कुल अलग है। मैं इस फिल्म में जिंदगी को पूरी तरह जीने वाली बिंदास मां बनी हूं। यह अपने आप में एकदम अलग भूमिका है और मजेदार भी। मुझे खुशी है कि मेरी इस फिल्म 'मां बहन' को दर्शकों का प्यार मिल रहा है। क्रिटिक्स को भी फिल्म पसंद आ रही है, इसे अच्छे रिव्यूज और रेटिंग्स मिल रहे हैं।

क्या इस फिल्म का टाइटल 'मां-बहन' आपको बहुत अटपटा नहीं लगा?

फिल्म के डायरेक्टर और को-राइटर सुरेश त्रिवेणी जब पहली बार मुझे इस फिल्म की कहानी सुनाने आए तो मैंने फिल्म का टाइटल पूछा। जब सुरेश जी ने फिल्म का टाइटल 'मां बहन' बताया तो मुझे लगा कि वह मजाक कर रहे हैं। लेकिन जब मैंने इस फिल्म की कहानी सुनी तो मुझे फिल्म का टाइटल सही लगा, क्योंकि यह टाइटल फिल्म की कहानी से पूरी तरह रिलेट करता है।

फिल्म के एक सीन में तृप्ति डिमरी, धरना दुर्गा के साथ माधुरी दीक्षित

आप इस फिल्म में काफी समय बाद कॉमेडी करती दिखीं। कैसा अनुभव रहा?

मुझे हमेशा से कॉमेडी फिल्म में काम करना पसंद रहा है। जब मुझे 'मां-बहन' फिल्म ऑफर हुई तो मुझे इसकी कहानी बहुत अच्छी लगी, क्योंकि इस फिल्म में लड़कियों और महिलाओं की भावनाओं को हास्य रूप में प्रस्तुत करते हुए एक बेहतरीन भावनात्मक कहानी को पेश करने की कोशिश की गई है। यह एक ऐसी फिल्म है, जो जिंदगी के कई रंगों को प्रस्तुत करती है। इस फिल्म के जरिए मेरी डार्क कॉमेडी में एंट्री हुई है। इस फिल्म में क्राइम, थ्रिल और इमोशंस के साथ-साथ कॉमेडी को भी डिफरेंट तरीके से प्रस्तुत किया गया है। यह पूरी फैमिली के साथ बैठकर देखी जाने लायक एंटरटेनमेंट से भरपूर फिल्म है।

इस फिल्म की शूटिंग के दौरान कैसे एक्सपीरियंस रहे?

बहुत ही मजेदार! मैंने इसमें एकदम उत्तर प्रदेश में रहने वाले लोगों की स्टाइल में डायलॉग्स बोले हैं, जिसमें मुझे बहुत मजा आया। सेट पर माहौल बहुत अच्छा रहता था। फिल्म में मेरी बेटियों का रोल निभा रहीं तृप्ति डिमरी और धरना दुर्गा के साथ मैं खूब मस्ती-मजाक करती थी। चूंकि यह फिल्म सस्पेंस मर्डर और कॉमेडी से भरपूर मजेदार कहानी है, इसलिए सेट पर माहौल भी पॉजिटिव और हंसी-मजाक वाला रहता था। सुरेश त्रिवेणी बहुत ही अच्छे कहानीकार और डायरेक्टर हैं, वो सेट पर हमेशा हल्का-फुल्का और पॉजिटिव माहौल रखते थे।

जब आप अपने फिल्मी सफर को याद करती हैं तो किन फिल्मों को लेकर आपको बेहद खुशी होती है?

मेरी कई ऐसी फिल्में हैं, जो सिर्फ सफल ही नहीं हुईं बल्कि जिसने मुझे और मेरे किरदार को भी यादगार बनाया, 'देवदास', 'हम आपके हैं कौन', 'तेजाब', 'दिल तो पागल है' ऐसी कितनी ही फिल्में हैं, जिनमें अभिनय करके मुझे संतुष्टि और खुशी मिली।

आप पर फिल्माए गए कई गाने आज भी पॉपुलर हैं, जैसे 'धक-धक करने लगा', 'चोली के पीछे क्या है' आदि। इन सॉन्ग्स को लेकर आप क्या कहेंगी?

मुझे खुशी होती है कि मेरे ऊपर फिल्माए गए गाने आज की पीढ़ी भी पसंद करती है। मैं जिस भी पार्टी फंक्शन में जाती हूं, वहां 'धक धक' गाने पर लड़कियों का डांस मुझे देखने को मिलता है। मैं खुद कई बार इस गाने पर पार्टी फंक्शन में डांस कर चुकी हूं। इसी तरह 'एक दो तीन', 'चोली के पीछे क्या है', 'चने के खेत में' और 'डोला रे डोला' जैसे सभी गाने आज भी पॉपुलर हैं, यह देखकर खुशी मिलती है। *

एक्टिंग करते बीत गए 40 साल

फिल्मों में एक्टिंग करते 40 साल बीतने पर क्या माधुरी को प्राउड फील होता है, पूछने पर वह कहती हैं, 'प्राउड तो नहीं कह सकती हां, खुशी जरूर होती है। क्योंकि मैं शुरू से ही एक्टिंग लाइन में आना चाहती थी। मैंने अपने आपको फिल्मों में स्टेब्लिश करने के लिए जी-तोड़ मेहनत भी की है। शुरुआत में तो लगता था कि पता नहीं मैं सफल होऊंगी या नहीं, लेकिन आज फिल्में करते-करते 40 साल निकल गए और इन सालों में मैंने कई बेहतरीन और यादगार फिल्में की, जिसकी मुझे बेहद खुशी है।